अगस्त, 2022, वर्ष : 43 अंक : 08 www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

परम पवन दलाई लामा को लद्दाख के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

अगस्त, 2022, वर्ष : 43 अंक : 08

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

यूरोपीय संघ की रणनीतिक बेठक में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग।

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन पलजोर , तेनजिन जोरदेन

वितरण प्रबंधक
छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

- केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख ने परम पावन दलाई लामा को 'लद्दाख पल नाम डसडन पुरस्कार - २०२२' से सम्मानित किया 1
- मिखाइल गोर्बाचेव को श्रद्धांजलि 2
- हिमाचल प्रदेश में मानसून के कारण हुई मौत और तबाही पर चिंता 3
- सिक्योंग ने प्राग में 'तिब्बत को लेकर सीटीए की यूरोप रणनीति' बैठक का संचालन किया 4
- अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल ने तिब्बती युवा कांग्रेस की १८वीं आम सभा को संबोधित किया 5
- चीन ने तिब्बतियों को निर्वासित महंत के जन्मदिन की बधाई ऑनलाइन पोस्ट न करने की चेतावनी दी (अधिकारियों का कहना है कि आदेश न मानने वालों को गिरफ्तार कर दंडित किया जाएगा।) 6
- चीनी अधिकारियों ने दलाई लामा की तस्वीर रखने के लिए तिब्बती व्यक्ति को गिरफ्तार किया निर्वासन में रह रहे एक तिब्बती का कहना है कि तिब्बती संस्कृति के खिलाफ चीन के अभियान से कर्मा समदुप छुब्ध हो गया था। 7
- यार्चेन गार की उपसंपदा दीक्षा प्राप्त बौद्ध भिक्षुणियों को 'पुनःशिक्षा' के लिए वापस तिब्बत भेजा गया 8
- धर्मशाला में सीटीए के नेतृत्व में तिब्बतियों ने भारत का ७६वां स्वतंत्रता दिवस मनाया 9

समाचार -

- एपीआईपीएफटी और सीजीटीसी-आईने तिब्बती मुद्दे को मजबूत करने के लिए बैठक बुलाई 10
- तिब्बती बस्तियों ने भारत की आजादी के ७५साल पूरे होने का जश्न मनाया 11
- अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के सदस्य बावा ने सदन की अध्यक्ष नैन्सी पेलोसी की मानवाधिकारों और लोकतंत्र समर्थक कार्यकर्ताओं के साथ बैठक में तिब्बत का मुद्दा उठाया 12
- अमेरिकी महावाणिज्य दूत जुडिथ रविन ने बाइलाकुप्पे तिब्बती बस्ती का दौरा किया 13
- प्रतिनिधि जेनखांग ने ताइवानी प्रतिनिधि से मुलाकात की 14
- चेक गणराज्य ने तिब्बती लोगों के साथ संबंधों को मजबूत किया: प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने प्राग की पहली यात्रा पूरी की 15
- वैश्विक जिम्मेदारी की भावना तिब्बती संस्कृति का दुनिया को सबसे बड़ा योगदान है: हॉलीवुड स्टार रिचर्ड गेर 16
- संयुक्त राष्ट्र के रिपोर्टियर को तिब्बत और झिंझियांग में जबरन श्रम के साक्ष्य मिले 17
- चीनी अत्याचारों के बावजूद तिब्बती महिलाएं स्वतंत्रता संग्राम जारी रखेंगी 18

मुद्रक एवं प्रकाशक जमयांग दोरजी द्वारा प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला , नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट www.indiatibet.net Email: indiatibet7@gmail.com

अपनी बात

केन्द्र शासित प्रदेश लद्दाख में दलाई लामा का प्रशंसनीय स्वागत

जम्मू-कश्मीर में से बनाये गये नये केन्द्र शासित प्रदेश लद्दाख में तिब्बती धर्मगुरु परमपावन दलाईलामा का सभी जगह जोरदार अभिनंदन प्रशंसनीय है। चीन के बुहान शहर से पूरे विश्व में फैली कोरोना महामारी के कारण दलाईलामा गत दो वर्षों तक हिमाचल प्रदेश में धरमशाला स्थित अपने निवास से ही ऑनलाइन प्रवचन कर रहे थे। परिणामतः उनके अनुयायी, समर्थक और प्रशंसक उनके प्रत्यक्ष दर्शन लाभ से वंचित थे। उन्हें उनकी यात्रा की लंबे समय से प्रतीक्षा थी। स्वयम् दलाई लामा भी सामान्य दिनों की तरह फिर से प्रवास करने के इच्छुक थे। अगस्त, 2022 में परिस्थिति अनुकूल होते ही उन्होंने नवगठित केन्द्र शासित प्रदेश लद्दाख में पहली बार आध्यात्मिक प्रवास किया। इस दौरान लेह, जंस्कार, लिंगत्से आदि स्थानों में स्थित बौद्ध मठों के साथ ही वे अन्य सम्प्रदायों से जुड़े मंदिर, चर्च, मस्जिद आदि में भी गये। सभी सम्प्रदायों के लिये उनके मन में सम्मान है यद्यपि वे स्वयम् बौद्ध मतावलंबी हैं।

दलाई लामा भारत को सभी सम्प्रदायों (मत, रिलिजन, मजहब, पंथ) के बीच सद्भाव का विश्व के लिये उत्कृष्ट उदाहरण बताते हैं। उनके अनुसार विष्व के सभी रिलिजन के अनुयायी भारत में हैं। प्रत्येक मजहब का अनुयायी अपनी पूजा पद्धति के अनुरुप आचार-विचार-व्यवहार रखे। इसके साथ ही वह अन्य सभी मजहब के प्रति आदरभाव रखे। सिर्फ अपने रिलिजन को ही सर्वश्रेष्ठ बताने तथा अन्य रिलिजन के प्रति दुर्भावनापूर्ण आचार-विचार-व्यवहार रखने से ही संघर्ष होता है। विष्वस्तर पर साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए एक ही उपाय है-सर्व पंथ समादर भाव। इसी सर्व पंथ समादर भाव अर्थात् सभी आध्यात्मिक पंथों के प्रति एक समान आदरपूर्ण भाव का उदाहरण है भारत। सभी आध्यात्मिक पंथों के लिये सद्भाव का प्रतीक बन चुके दलाईलामा बौद्ध पंथ से जुड़े कार्यक्रमों में अन्य मतावलंबियों को भी बुलाते हैं और अन्य मतावलंबी भी अपने कार्यक्रमों में उन्हें बुलाते हैं। इसी साम्प्रदायिक सद्भाव का परिणाम था कि लेह स्थित श्रद्धेय कुषोक बकुला रिंपोछे हवाई अड्डे से लेकर उनके निवास जीवस्थल तक सभी सम्प्रदायों के अनुयायी स्वागत में कतारबद्ध खड़े थे। सभी रिलिजन के अनुयायियों ने अपने मठ, मंदिर, चर्च, मस्जिद आदि पूजा स्थलों पर उनका भरपूर स्वागत किया। उन्होंने उनके उपदेश सुने एवं दर्शन तथा आशीर्वाद प्राप्त किये।

लद्दाख बुद्धिस्ट एसोसिएशन तथा लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद् सहित अन्य सभी मतावलंबियों ने भी दलाईलामा के दीर्घजीवन हेतु विशेष पूजादि के आयोजन किये। दलाईलामा ने लद्दाख प्रवास के दौरान षिक्षण केन्द्रों के उद्घाटन भी किये। सिंधु घाट पर लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद् द्वारा अपने वार्षिक सम्मान एवं पुरस्कार से दलाईलामा को सम्मानित किया गया। दलाईलामा के सम्मान में आयोजित विशेष भोज से भी उनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन और आशीर्वाद के लिये केन्द्र शासित प्रदेश लद्दाख के लोगों की भावविह्वलता स्पष्ट थी।

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के उपलक्ष्य में अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह के पोर्टब्लेयर में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भी मुझे विशेष चर्चा के दौरान दलाई लामा के समर्थन तथा साम्राज्यवादी चीन की तिब्बत में जारी दमननीति के विरोध में सुनने को मिला। जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय में संपन्न नेताजी सुभाषचन्द्र बोस एवं वीर सावरकर से संबंधित संगोष्ठी में इस तथ्य पर जोर था कि चीन से संबंध मजबूत करने के लिये भारत अपनी राष्ट्रीय शक्ति में लगातार बढ़ोतरी करे। यही विचार लोकतांत्रिक तरीके से मतदान द्वारा निर्वाचित तिब्बत की निर्वासित सरकार का भी है। निर्वासित तिब्बत सरकार के राजप्रमुख (सिक्योंग) पेंपा त्सेरिंग ने हम भारतीयों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई देते हुए आश्वस्त किया है कि भारत की आजादी का अमृत महोत्सव भारत को और भी स्वबलंबी तथा शक्तिशाली बनायेगा। तिब्बतियों तथा तिब्बत समर्थकों का मत है कि शक्तिशाली भारत ही तिब्बत समस्या का समाधान करा सकता है। सिक्योंग पेंपा त्सेरिंग ने अगस्त में ही अपनी चेक गणराज्य की यात्रा के दौरान फोरम 2000 की बैठक में तथा चेक गणराज्य की संसद द्वारा आयोजित अपने आधिकारिक स्वागत में तिब्बत में जारी चीनी दमननीति के दुष्परिणामों को सप्रमाण उठाया है। वहाँ के प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री तथा संस्कृति मंत्री आदि से मिलकर भी उन्होंने तिब्बत समस्या के समाधान में सहयोग की अपील की है।

ख़ुशी की बात है कि उपनिवेशवादी चीन के विरुद्ध यूरोपीय देश पहले से ज्यादा मुखर हो गये हैं। उनके अनुसार तिब्बत समस्या सम्पूर्ण विश्व के लिये संकट है। चीन की उपनिवेशवादी नीति के शिकार उसके सभी पड़ोसी देश हैं। पूरे विश्व में तिब्बतियों के साथ अन्य देशों के लोग भी चीन के विरुद्ध सक्रिय हैं। उनके प्रदर्शन को और भी गति तथा शक्ति देने का यह सही समय है।

अमरीका और भारत विस्तारवादी चीन पर दबाव बढ़ाये तो सार्थक परिणाम शीघ्र निकलेंगे। अमरीका खुलकर चीन की दमनकारी नीति के विरुद्ध खड़ा है। भारतीय नरेन्द्र मोदी सरकार भी हठधर्मी चीन के विरुद्ध डटी है। चीन को गत कुछ वर्षों से पहली बार भारतीय विरोध झेलना पड़ा है। उसे भारतीय शर्तों के अनुरुप भारत की गलवान घाटी से लौटना ही होगा, जैसा कि उसने डोकलाम में किया था। डोकलाम है भूटान में लेकिन भूटान की सुरक्षा भारत की जिम्मेदारी है। भारत ने अपनी जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभाई थी। अब भी ऐसा ही होगा। इसी विश्वास के बल पर तिब्बती और तिब्बत समर्थक चाहते हैं कि तिब्बत समस्या के शीघ्र समाधान हेतु चीन के विरुद्ध भारत अपने प्रभाव का भरपूर उपयोग करे।

प्रो. श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

• केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख ने परम पावन दलाई लामा को 'लद्दाख पल नाम डसडन पुरस्कार - २०२२' से सम्मानित किया

Dalailama.com, ०५अगस्त २०२२

ठिकसे रिनपोछे परम पावन दलाई लामा को लद्दाख के सर्वश्रेष्ठ पल नाम डसडन पुरस्कार से सम्मानित करते हुए।

शिवाछेल, लेह, लद्दाख, केंद्र शासित प्रदेश, भारत। २०१९ में लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश (यूटी) का दर्जा दिए जाने की चौथी वर्षगांठ पर ०५अगस्त २०२२ की सुबह परम पावन को 'लद्दाख डीपल रंगम डसडन अवार्ड- २०२२'पुरस्कार प्रदान किया गया, जो कि लद्दाख के लिए ऐतिहासिक महत्व का है। यह समारोह केंद्र शासित प्रदेश प्रशासन द्वारा पवित्र सिंधु नदी के सिंधु घाट पर आयोजित किया गया। लेह के पास सिंधु नदी को तिब्बती में सेंगे त्सांगपो के नाम से जाना जाता है। समारोह का संचालन लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद (एलएएचडीसी) के अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी आयुक्त श्री ताशी ग्यालसन, लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश के सलाहकार श्री उमंग नरुला और अन्य अधिकारियों ने किया।

यह पुरस्कार परम पावन की सर्वव्यापी करुणा, शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने और तिब्बत की समृद्ध बौद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के उनके प्रयासों के सम्मान में दिया गया। यह लद्दाख के सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में परम पावन की अद्वितीय भूमिका के लिए लद्दाख के लोगों की उनके प्रति गहरी कृतज्ञता का भी इजहार करता है। साथ ही साथ १९६६ में परम पावन की पहली लद्दाख यात्रा के बाद से उनके साथ यहां के लोगों के गर्वपूर्ण संबंधों की भावना का भी प्रतिनिधित्व करता है।

संयोग से ०५ अगस्त का दिन राजा सेंगे नामग्याल के तत्कालीन राज्य लद्दाख के सिंहासन पर बैठने की ४००वीं वर्षगांठ भी है।

वक्ताओं में केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के सलाहकार आईएएस श्री उमंग नरुला, लद्दाख के सांसद श्री जमयांग छेरिंग नामग्याल और एलएएचडीसी के अध्यक्ष श्री ताशी ग्यालसन थे। वक्ताओं ने लद्दाख से होकर बहने वाली यहां की महत्वपूर्ण जीवन रेखा सिंधु नदी की बड़ी प्रशंसा की। उन्होंने लद्दाख के लोगों के गुणों की भी प्रशंसा की, जिनमें से कई ने राष्ट्र की रक्षा सहित अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। वक्ताओं ने विश्व में शांति और प्रेम को बढ़ावा देने में दलाई लामा के समर्पण, उनकी बुद्धि और करुणा और उनके द्वारा दिखाए गए स्नेह के लिए परम पावन के प्रति गहरा आभार व्यक्त किया। परम पावन लद्दाख के युवा और बूढ़ लोगों के लिए प्रेरणा के एक बड़े स्रोत हैं।

इस अवसर पर परम पावन ने समझाया कि वह बुद्ध के मार्ग पर चलनेवाले व्यक्ति हैं, जो दशकों से बुद्ध वचनों का अनुशासित तरीके से अध्ययन करते रहे हैं। अध्ययन का यह क्रम निर्वासन में आने के बाद भी जारी है। उन्होंने कहा कि त्रिपिटकों के साथ ही भारतीय और तिब्बती आचार्यों द्वारा त्रिपिटकों की व्याख्या में रचित ग्रंथों में निहित शिक्षाओं का अध्ययन जारी है।

परम पावन ने समझाया कि बुद्ध की शिक्षाओं का अध्ययन करने का प्रमुख कारण मन को अनुशासित करना है। उन्होंने कहा कि यह उनकी अपनी साधना है और परोपकारी जागृत मन की साधना करने से आंतरिक शक्ति और सभी जीवों की भलाई के लिए काम करने का दृढ़ संकल्प आता है जो अपने आप में मन की शांति लाता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनकी अन्य प्रमुख साधना मध्यम मार्ग परिणामवादी (प्रासंगिका माध्यमिका) दृष्टिकोण के संदर्भ में प्राणियों और घटनाओं के अस्तित्व की जांच करना है। इस

प्रकार उन्होंने समझाया कि कैसे वह बोधिचित्त के जाग्रत मन को प्राणियों और चीजों की स्थिति में एक अंतर्दृष्टि के साथ जोड़कर अपने मन और भावनाओं को अनुशासित करते हैं।

उन्होंने घोषणा की कि उन्हें उन लोगों द्वारा दिए गए पुरस्कार को स्वीकार करने में प्रसन्नता हो रही है, जिनकी आस्था और जिनका विश्वास उन पर अडिग है।

परम पावन ने स्वीकार किया कि तिब्बत और लद्दाख के लोगों के बीच घनिष्ठ और मधुर संबंध रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम एक ही बौद्ध संस्कृति और अपने बीच से बहने वाली महान सिंधु नदी या सेंगे ख्बाब घाटी के लोग हैं।

परम पावन ने कहा,'मैं वास्तव में लद्दाख में विभिन्न धर्म समुदायों के बीच मौजूद उत्कृष्ट सद्भाव और मित्रता की सराहना करता हूं। ये सभी धार्मिक परंपराएं दूसरों की मदद करने के महत्व पर जोर देती हैं और चूंकि हम सभी खुश रहना चाहते हैं, इसलिए हमें मानवता की एकता के प्रति जागरूक होकर अपने बीच सद्भाव बनाए रखने के लिए काम करना चाहिए।'

'इसके अलावा, मैं आपसे पेड़ लगाने और उनकी देखभाल करने का आग्रह करता हूं। यह एक सकारात्मक कदम है और जिसे हम पूरी मानवता को खतरे में डालने वाले ग्लोबल वार्मिंग के खतरे से निपटने के लिए उठा सकते हैं। आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी है कि हम आज जितना हो सके, पर्यावरण की देखभाल करें।'

चूंकि लद्दाख मानसून के दौरान धर्मशाला की तरह पानी-पानी नहीं होता है, इसलिए मुझे उम्मीद है कि भविष्य में नियमित रूप से लद्दाख का दौरा जारी रख सकूंगा-, मैं आपसे फिर से मिलने को बहुत उत्सुक हूं।

पार्षद वी. कोंचोक स्टीफन ने परम पावन, विभिन्न वक्ताओं, गणमान्य व्यक्तियों, सांस्कृतिक कलाकारों और उन सभी लोगों को धन्यवाद देते हुए इस समारोह के समापन की घोषणा की, जिन्होंने इस आयोजन को सफल बनाने में महत योगदान दिया।

• मिखाइल गोर्बाचेव को श्रद्धांजलि

Dalailama.com, १३ अगस्त २०२२

परम पवन दलाई लामा और मिखाइल गोर्बाचेव।

थेकछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। १३ अगस्त की सुबह सोवियत संघ के पूर्व नेता और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मिखाइल गोर्बाचेव के निधन का समाचार सुनने पर परम पावन दलाई लामा ने दुख व्यक्त करते हुए गोर्बाचेव फाउंडेशन को पत्र लिखा।

उन्होंने लिखा, 'मैं अपने दोस्त के लिए दिल से प्रार्थना करता हूं और उनकी बेटी इरिना विरगांस्काया और उनके परिवार के सदस्यों, उनके दोस्तों और समर्थकों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं।'

परम पावन ने लिखा,'मैं उनके अधिक से अधिक खुलेपन और परिवर्तन लाने के प्रयासों के साथ-साथ परमाणु युद्ध का विरोध के लिए उनका बहुत सम्मान करता था। उन्होंने दुनिया में परमाणु हथियारों की संख्या को कम करने के लिए सक्रिय रूप से काम किया।

वर्षों तक मुझे कई अवसरों पर उनसे मिलने का बहुत सुअवसर मिला और हम दोनों दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अनेक शांति मंचों पर साथ रहे। हम हमेशा निकट संपर्क में बने हुए थे।

मिखाइल गोर्बाचेव दूरदर्शी और अनुकरणीय राजनेता थे। अपनी सेवानिवृत्ति के बाद भी वे दुनिया में शांति और सुलह को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध रहे। नोबेल शांति पुरस्कार विजेताओं के विश्व शिखर सम्मेलन की उनकी पहल ने नोबेल शांति पुरस्कार विजेताओं और उनसे संबंधित संगठनों को नियमित रूप से एक साथ आने का अवसर दिया है, ताकि एक अधिक जिम्मेदार, शांतिपूर्ण दुनिया बनाने के उनके सामूहिक विचारों को लागू किया जा सके।

परम पावन ने पत्र के अंत में लिखा, उन्होंने एक सार्थक जीवन जिया। हमें उस उत्साह और दृढ़ संकल्प का अनुकरण करके उनकी भावना को जीवित रखना चाहिए, जिसके साथ उन्होंने स्वतंत्रता को प्रोत्साहित किया और एक सैन्यविहीन दुनिया बनाने के लिए काम किया।

• हिमाचल प्रदेश में मानसून के कारण हुई मौत और तबाही पर चिंता

Dalailama.com, २२ अगस्त २०२२

शिवाछेल, लेह, लद्दाख, भारत। वर्तमान में लद्दाख दौरे पर चल रहे परम पावन दलाई लामा अत्यधिक भारी मानसूनी वर्षा की रिपोर्टों से बहुत दुखी हैं। मानसून में भारी वर्षा से बहुमूल्य जीवन का

नुकसान हुआ है।साथ ही साथ संपत्ति और बुनियादी ढांचे को भी नुकसान हुआ है। हिमाचल प्रदेश के कई हिस्सों में कई लोगों को बड़ी कठिनाई हो रही है। परम पावन ने राज्य के मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर को पत्र लिखकर दुख व्यक्त किया है।

उन्होंने लिखा, 'मैं आपके और अपने प्रियजनों को खोने वाले परिवारों और इस तबाही से प्रभावित सभी लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं। मैं उनके लिए प्रार्थना करता हूं।'

'मैं इस बात की सराहना करता हूं कि राज्य सरकार और अन्य एजेंसियां इन विपत्तिपूर्ण परिस्थितियों से प्रभावित लोगों को राहत प्रदान करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही हैं।'

'मुझे आशा है कि आप जानते होंगे कि मैं स्वाभाविक रुप से हिमाचल प्रदेश के लोगों के लिए विशेष आत्मीयता रखता हूं। हिमाचल प्रदेश ६०से अधिक वर्षों से मेरा घर रहा है।

हिमाचल प्रदेश के लोगों, हमारे दोस्तों और पड़ोसियों के साथ हमारी एकजुटता के प्रतीक के तौर पर दलाई लामा ट्रस्ट राहत और बचाव प्रयासों के लिए दान कर रहा है।'

परम पावन ने प्रार्थना और शुभकामनाएं देते हुए अपना पत्र समाप्त किया।

• सिक्योंग ने प्राग में 'तिब्बत को लेकर सीटीए की यूरोप रणनीति' बैठक का संचालन किया

Tibet.net, २९अगस्त, २०२२

यूरोपीय संघ की रणनीतिक बेठक में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग।

प्राग। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) ने २८अगस्त २०२२ को चेक गणराज्य की राजधानी प्राग में एक दिवसीय 'यूरोप रणनीति बैठक' का आयोजन किया। बैठक का आयोजन १६वीं कशाग की स्थायी रणनीति समिति और तिब्बत ब्यूरो-जिनेवा द्वारा संयुक्त रुप से किया गया था।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग की अध्यक्षता में हुई हाइब्रिड बैठक में स्थायी रणनीति समिति के सलाहकार केल्सांग ग्यालत्सेन, ओओटी ब्रुसेल्स के प्रतिनिधि जेनखांग रिगज़िन चोएडन, तिब्बत ब्यूरो-जिनेवा से प्रतिनिधि थिनले चुक्की और संयुक्त राष्ट्र में एडवोकेसी अधिकारी कलडेन त्सोमो और ओओटी लंदन के सचिव लोबसांग सैमटेन ने व्यक्तिगत रुप से भाग लिया। सीटीए की स्थायी रणनीति समिति में राजनीतिक सचिव ताशी ग्यात्सो, डीआईआईआर सचिव कर्मा चोयिंगऔर कशाग सचिवालय के अतिरिक्त सचिव लोबसांग चोएडक ने ओओटी लंदन के प्रतिनिधि सोनम फ्रैसी,डीआईआईआर के अतिरिक्त सचिव नामग्याल छेवांग और तेनज़िन लेक्षय, परम पावन दलाई लामा ब्यूरो, नई दिल्ली के सचिव धुंडुप ग्यालपो के साथ बैठक में आभासीय माध्यम से शामिल हुए।

बैठक में चेक गणराज्य के पूर्व उप प्रधानमंत्री और 'चेक सपोर्ट' तिब्बत के संस्थापक मार्टिन बर्सिक, चेक गणराज्य स्थित थिंक टैंक 'सिनोप्सिस' के निदेशक डॉ मार्टिन हाला, फोरम- २०००के निदेशक जैकप क्लेपाल, इटालिया-तिब्बत एसोसिएशन के बोर्ड सदस्य डॉ गुंथेर कोलोग्ना के साथ-साथ आईसीटी- यूरोप के कार्यकारी निदेशक वांगपो टेथोंग और आईसीटी-ब्रुसेल्स के विंसेंट मेटेन ने भी अपनी बात रखी।

बैठक का उद्देश्य यूरोप में विकसित भू-राजनीतिक परिदृश्य को समझना, यूरोपीय संघ को तिब्बत मुद्दे पर द्विपक्षीय और बहुपक्षीय दोनों प्लेटफार्मों में शामिल करने के लिए रणनीतिक दृष्टिकोण पर चर्चा करना और यूरोपीय संघ के भीतर तिब्बत के लिए अवसरों और चुनौतियों की पहचान करना सुनिश्चित किया गया था।

सिक्योंग पेनपा छेरिंग वर्तमान में प्राग के एक सप्ताह के आधिकारिक कार्यक्रम दौरे पर हैं। इस दौरान वह अधिकारियों और सांसदों के साथ बैठकें करेंगे और फोरम- २०००के २६वें संस्करण को संबोधित करने वाले हैं।

• अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल ने तिब्बती युवा कांग्रेस की १८वीं आम सभा को संबोधित किया

Tibet.net, २९अगस्त, २०२२

निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल

र्मशाला। निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल के नेतृत्व वाली स्थायी समिति के सदस्यों ने २७ अगस्त २०२२ को आयोजित तिब्बती युवा कांग्रेस (टीवाईसी) की १८वीं आम सभा की बैठक के उद्घाटन समारोह में भाग लिया।

उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल और

सीटीए के सुरक्षा विभाग के कालोन ग्यारी डोल्मा, भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफए) के पूर्व अध्यक्ष श्री अजय सिंह मनकोटिया और धर्मशाला भारत-तिब्बत मैत्री संघ के अध्यक्ष श्री अजीत नेहरिया विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित थे। साथ ही स्थायी समिति के सदस्य, गैर सरकारी संगठनों के प्रमुख, और तिब्बती युवा कांग्रेस के ४५क्षेत्रीय चैप्टर से प्रतिभागी बैठक में उपस्थित थे।

समारोह की शुरुआत मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों और टीवाईसी अध्यक्ष द्वारा घी के दीये जलाने के साथ हुई। इसके बाद तिब्बती और भारतीय राष्ट्रगान और टीवाईसी एकता गीत गाया गया। अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल ने अपने संबोधन में मुख्य रुप से तीन बिंदुओं- तिब्बत के अंदर और बाहर तिब्बतियों की स्थिति, चीन की बदलती राजनीतिक गतिशीलता और अंतरराष्ट्रीय राजनीति की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए अपनी बात रखी।

उन्होंने छह दशकों से अधिक समय से चल रही तिब्बत मुक्ति साधना की गति को बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने तिब्बत में तिब्बतियों की वर्तमान दयनीय स्थिति के बावजूद उनकी वीरता, बलिदान और कि व्हाइट बुधवार आंदोलन (लखार) और अन्य गतिविधियों में सुनियोजित सक्रियता की विशेष रुप से सराहना की। जैसा कि परम पावन दलाई लामा हमेशा कहते हैं कि तिब्बत के अंदर तिब्बतियों द्वारा अपनाई गई आस्था और प्रतिबद्धता हमेशा सुसंगत और अटूट रही है। इसलिए, तिब्बतियों को तिब्बत पर आधारित संघर्ष के भविष्य रणनीतियों पर चर्चा करने पर विचार करना चाहिए, चाहे वे तिब्बत के अंदर हों या तिब्बत के बाहर।

चीनी सरकार द्वारा लागू की गई चीनीकरण की नीतियों के कारण तिब्बत के अंदर की स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है।क्योंकि इससे तिब्बत की विशिष्ट भाषा, संस्कृति और धर्म का सफाया हो रहा है। इसके बावजूद तिब्बत के अंदर तिब्बतियों का केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और निर्वासित तिब्बतियों में सबसे मजबूत विश्वास है।लेकिन हाल में निर्वासन में रह रहे तिब्बतियों के काम करने के तरीके के कारण उनका निर्वासित तिब्बतियों के प्रति विश्वास डगमगाने लगा है। इसलिए, उन्होंने निर्वासन में रहने वाले तिब्बतियों को वृहत्तर तिब्बती समुदाय और तिब्बत के सर्वसम्मत मुद्दे के हित में समुदाय के अंदर की मामूली असहमति को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके बावजूद, परम पावन जैसे उदार नेताओं के नेतृत्व में तिब्बतियों को खुले दिमाग से कुछ छोटी-मोटी असहमतियों पर चर्चा करके आम सहमत बनानी चाहिए और संघर्ष के लिए एकजुट होकर काम करना चाहिए।

तानाशाही शासन के तहत चीन की बदलती राजनीतिक गतिशीलता पर बोलते हुए स्पीकर ने चीनी नेताओं- शी जिनपिंग और बो शिलाई के बीच हुई राजनीतिक असहमति पर बात की।इस असहमति के परिणामस्वरुप शिलाई राजनीतिक परिदृश्य से गायब हो गए और बाद में लोगों को बड़े राजनीतिक और आर्थिक तनाव का सामना करना पड़ा। इससे वहां जन क्रांति की आशंका प्रबल हो उठी है। इसलिए, इस पर विचार होना चाहिए कि यदि चीन की वर्तमान राजनीति में कोई क्रांतिकारी परिवर्तन होता है तो तिब्बतियों की योजना और भविष्य की कार्रवाई क्या होगी। हाल ही में परम पावन दलाई लामा ने लद्दाख में राजनीति से संबंधित एक सशक्त सार्वजनिक भाषण दिया है, जिसे सभी तिब्बतियों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। चीन को भी सोवियत संघ जैसी नियति का सामना करना पड़ सकता है।यदि ऐसा होता है तो चीन की बदलती राजनीतिक गतिशीलता के साथ तिब्बतियों का क्या रुख होगा। तिब्बतियों को इन परिस्थितियों से निपटने के तरीकों पर चर्चा करनी चाहिए।

इसी तरह, उन्होंने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में तिब्बत के मुद्दे को शामिल करने के महत्व को भी दोहराया और वाशिंगटन डीसी में तिब्बत पर हाल ही में आयोजित विश्व सांसदों के आठवें सम्मेलन की बात की, जिसे काशाग (कैबिनेट) के समर्थन और सहायता से निर्वासित तिब्बती संसद द्वारा आयोजित किया गया था। कार्यपालिका और विधायिका ने संयुक्त रुप से एक ऐसा सम्मानित सम्मेलन आयोजित किया जिसमें अनेक गणमान्य हस्तियों ने भाग लिया। इन में अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की अध्यक्ष नैन्सी पेलोसी और २८विभिन्न देशों के कई प्रभावशाली गणमान्य व्यक्ति और सांसद शामिल हुए। पिछले डब्ल्यूपीसीटी के विपरीत, इस सम्मेलन में दक्षिण अमेरिका के सांसदों की भी भागीदारी थी। इसके अलावा, हाल ही में तिब्बत के मुद्दे को जी-७ शिखर सम्मेलन के दौरान उठाया गया था जो बहुत ही सराहनीय है रहा और तिब्बतियों को जी-२०शिखर सम्मेलन और चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड) की चर्चाओं में भी तिब्बत मुद्दे को लाने का प्रयास करना चाहिए।

इसके अलावा समारोह में स्पीकर ने डॉ. छेतेन साधुत्सांग और डॉ. छेवांग तामदीन (परम पावन दलाई लामा के निजी चिकित्सक) को उनके सामाजिक कार्यों के लिए और पूर्व टीवाईसी अध्यक्ष और पूर्व तिब्बती सांसद छेवांग नोरबू को रंगजेन पुरस्कारों से सम्मानित किया। इसी तरह, दिल्ली, पोंटा और बीर के क्षेत्रीय टीवाईसी अध्यायों को कालोन ग्यारी डोल्मा द्वारा उनके विशिष्ट कार्यों के लिए पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इसके अलावा १५से अधिक वर्षों से क्षेत्रीय धर्मशाला टीवाईसी में सेवा कर रहे कार्यकारी समिति के सदस्य मिगमार को श्री अजीत नेहरिया द्वारा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसी तरह, टीवाईसी के उपाध्यक्ष छेरिंग को श्री अजय सिंह मनकोटिया द्वारा टीवाईसी और आरटीवाईसी में १५से अधिक वर्षों की सेवा के लिए एक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम का समापन टीवाईसी के उपाध्यक्ष लोबसांग द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

• चीन ने तिब्बतियों को निर्वासित महंत के जन्मदिन की बधाई ऑनलाइन पोस्ट न करने की चेतावनी दी

(अधिकारियों का कहना है कि आदेश न मानने वालों को गिरफ्तार कर दंडित किया जाएगा।)

Rfa.org / सांग्याल कुंचोकी, ०४अगस्त, २०२२

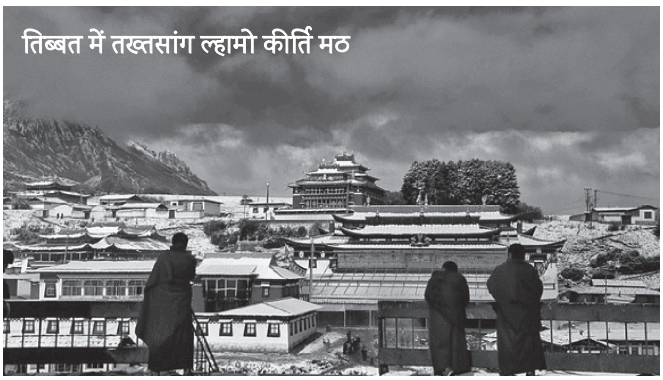
तिब्बत में तख्तसांग ल्हामो कीर्ति मठ

चीनी सरकार ने एक प्रमुख तिब्बती बौद्ध आध्यात्मिक गुरु के आनेवाले जन्मदिन के मद्देनजर प्रतिबंधों को बढ़ा दिया है।स्थिति के जानकार सूत्रों ने गुरुवार को बताया कि दो तिब्बती क्षेत्रों में स्थानीय नेताओं से कहा गया है कि वे स्थानीय लोगों को आध्यात्मिक गुरु की तस्वीर या शुभकामनाएं ऑनलाइन पोस्ट करने से रोकें।

अधिकारियों ने न्गाबा और द्ज़ोगे क्षेत्रों में ११वें क्याबजे कीर्ति रिनपोछे (सम्मानित) लोबसांग तेनज़िन जिग्मे येशे ग्यामत्सो रिनपोछे के ८०वें जन्मदिन पर ०८अगस्त को कोई शुभकामना संदेश पोस्ट करके इस आदेश की अवहेलना करने वाले तिब्बतियों को गिरफ्तार करने की धमकी दी है।

रिनपोछे निर्वासन में कीर्ति मठ के मुख्य मठाधीश हैं, जो तिब्बत के सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली मठों में से एक है।

तिब्बत के अंदर के एक तिब्बती सूत्र ने पहचाने जाने के भय से खुलकर बोलने से इनकार करते हुए कहा, 'सरकार ने तिब्बतियों द्वारा इस तरह की गतिविधि के बारे में चेतावनी दी हैऔर अगर लोग इसका उल्लंघन करते पाए गए तो उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा और कड़ी सजा दी जाएगी।'

चीनी अधिकारियों ने २०२१ में सिचुआन प्रांत के न्गाबा तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर के द्ज़ोगे काउंटी में ताकत्संग ल्हामो कीर्ति मठ और न्गाबा काउंटी में कीर्ति मठ के भिक्षुओं को रिनपोछे का जन्मदिन मनाने से प्रतिबंधित कर दिया था। यह पूरा क्षेत्र तिब्बती मूल की घनी आबादी वाला है।

उस समय भिक्षुओं को अपने मठों को छोड़ने की अनुमति नहीं दी गई थीऔर सभाओं की अनुमति नहीं थी।

निर्वासन में रहने वाले एक तिब्बती ने कहा, 'पिछले साल तिब्बत के अंदर तिब्बतियों को कीर्ति रिनपोछे का ८०वां जन्मदिन मनाने पर चीनी सरकार की ओर से प्रतिबंधों और जांच का सामना करना पड़ा था, इसलिए वे पीछे हट गए।'

सूत्र ने आध्यात्मिक धर्मगुरुओं के लिए की गई लंबी उम्र की प्रार्थना का जिक्र करते हुए कहा कि, 'लेकिन इस सालनिर्वासन में और तिब्बत के अंदर रह रहे तिब्बती रिनपोछे का जन्मदिन मनाने और तेनशुग की पेशकश करने के लिए उत्सुक हैं। हालांकि हम न्गाबा और द्जोगे में अधिकारियों को प्रतिबंध लगाते और जांच करते देख रहे हैं।'

कीर्ति मठ तिब्बत में चीन की दमनकारी नीतियों का विरोध करने वाले अधिकांश भिक्षुओं द्वारा आत्मदाह करने का प्रमुख केंद्र रहा है।

निर्वासित सूत्र ने कहा, 'कुछ ऑनलाइन तिब्बती चैट समूहों के बीच प्रसारित एक पोस्ट में सदस्यों को कीर्ति रिनपोछे या उनके जन्मदिन के बारे में बात नहीं करने और सावधान रहने की चेतावनी दी गई है।'
निर्वासित तिब्बती ने कहा कि इस साल के अंत में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की आगामी २०वीं राष्ट्रीय कांग्रेस के होनेवाले आयोजन के कारण अब न्गाबा क्षेत्र में प्रतिबंध अधिक हैं।
रिनपोछे का जन्म किंघई-तिब्बत पठार के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित तिब्बत के अमदो क्षेत्र में थेवो तकमो गैंग में हुआ था। जब वे बच्चे थे तो प्रमुख लामाओं ने उन्हें १०वें कीर्ति रिनपोछे के पुनर्जन्म के रुप में मान्यता दी और उन्हें १९४६ में ताकत्संग ल्हामो कीर्ति मठ में रखा गया।
एक दशक बाद चीन द्वारा १९५९में तिब्बत पर आक्रमण के बाद रिनपोछे तिब्बती आध्यात्मिक धर्मगुरु दलाई लामा के साथ भारत के धर्मशाला में निर्वासन में चले आए। उन्होंने भारत में बौद्ध धर्म और दर्शन का गहन उच्च अध्ययन कियाऔर १९६२ में दलाई लामा से बौद्ध भिक्षु की उच्च दीक्षा ग्रहण की।
१९८०के दशक के उत्तरार्ध सेरिनपोछे ने निर्वासन में तिब्बती सरकार 'केंद्रीय तिब्बती प्रशासन'में विभिन्न पदों पर कार्य किया।

चीनी अधिकारियों ने दलाई लामा की तस्वीर रखने के लिए तिब्बती व्यक्ति को गिरफ्तार किया

• निर्वासन में रह रहे एक तिब्बती का कहना है कि तिब्बती संस्कृति के खिलाफ चीन के अभियान से कर्मा समदुप क्षुब्ध हो गया था।

Rfa.org / सांग्याल कुंचोकी, २५अगस्त, २०२२

कर्मा समदुप

तिब्बत में चीनी अधिकारियों ने १९५९से निर्वासन में रह रहे तिब्बत के सर्वोच्च बौद्ध आध्यात्मिक धर्मगुरु दलाई लामा की तस्वीर रखने के आरोप में एक तिब्बती को हिरासत में लिया है। आरएफए ने इस खबर का संज्ञान लिया है।

निर्वासन में रहने वाले एक तिब्बती ने खुलकर बोलने के लिए नाम न छापने की शर्त पर आरएफए की तिब्बती सेवा को बताया कि नागचू काउंटी (चीनी:नागकू) के सर्नेई बस्ती के कर्मा समदुप को जब अधिकारियों ने १२ अगस्त को गिरफ्तार किया, उस समय उनके पास गर्दन के चारों ओर और उनकी कार में लटकी हुई १४वें दलाई लामा की तस्वीर थी।

सूत्र ने कहा कि उनकी गिरफ्तारी चीनी सरकार के स्ट्राइक हार्ड (कठोर हमले) अभियान का हिस्सा है जिसके तहत वे तिब्बतियों पर नकेल कस रहे हैं। अभी तक हमारे पास समदुप के ठिकाने के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है।
हाल ही में ल्हासा में लगाए गए कड़े प्रतिबंधों के बीच उसे गिरफ्तार किया गया था। तब चीनी सरकार ने उन्हें दलाई लामा की तस्वीर रखने के 'अलगाववादी कृत्य' के लिए गिरफ्तार किया था।'

कर्म समदुप को कहां रखा गया है, इसकी जानकारी नहीं मिल पाई है।
'द स्ट्राइक हार्ड कैंपेन' तिब्बत के चीन से अलग होने के पैरोकारों को निशाना बनाने के लिए चीनी सरकार का एक अभियान है। न्यूयॉर्क स्थित ह्यूमन राइट्स वॉच के अनुसार, अभियान १९९६ में शुरू हुआ था और इसके परिणामस्वरूप अहिंसक राजनीतिक और धार्मिक गतिविधियों में भाग लेने वालों को गायब कर दिया गया, यातनाएं दी गईं और लंबी जेल की सजाएं सुनाई जाती हैं।

आरएफए ने जनवरी में रिपोर्ट दी कि चीनी अधिकारियों ने आदेश दिया कि सार्वजनिक क्षेत्र में काम की तलाश कर रहे तिब्बतियों को दलाई लामा से सभी संबंधों को त्याग देने की शर्त पर ही रोजगार दिया जाना चाहिए।
एक अन्य युवा तिब्बती यूडॉन को ११जुलाई को दलाई लामा की तस्वीर रखने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। ०६जुलाई को दलाई लामा के ८७वें जन्मदिन के मौके पर प्रशासन हाई अलर्ट पर था।

• यार्चेन गार की उपसंपदा दीक्षा प्राप्त बौद्ध भिक्षुणियों को 'पुनःशिक्षा' के लिए वापस तिब्बत भेजा गया

bitterwinter.org / हे युयान,०३ अगस्त २०२२

(तिब्बत में भिक्षुणियों की संख्या को सीमित करने के कारण भिक्षुणियां सिचुआन के बड़े मठ में गई थीं। सीसीपी के व्यापक तंत्र ने उन्हें वहां से खोज निकाला।)

हाल के विध्वंस से पहले यार्चेन गार का एक दृश्य

यार्चेन गार दुनिया का सबसे बड़ा मठ हुआ करता था। यह गारज़ू तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर में स्थित है, जो ऐतिहासिक रूप से तिब्बत का हिस्सा हुआ करता था, जिसे अब चीनी प्रांत सिचुआन में शामिल कर दिया गया है। यार्चेन गार के अधिकांश निवासी तिब्बती बौद्ध भिक्षुणियाँ हैं।यहां भिक्षुणियों की बड़ी संख्या को देखते हुए इस विशाल मठ को 'भिक्षुणियों के शहर' भी कहा जाता था। एक समय में यहां लगभग १०,०००भिक्षुणियां रहती थीं।
कुछ साल पहले तक सीसीपी ने भिक्षुणियों को निगरानी में रखा था, लेकिन यार्चेन गार में पर्यटकों को भी आने दिया जाता था। ऐसा यह दिखाने के लिए किया जाता था कि तिब्बती बौद्ध धार्मिक स्वतंत्रता में रहते हैं। वास्तव में, जब अधिकारियों को लगा कि मठ बहुत अधिक बढ़ रहा है, तो २१वीं सदी की शुरुआत में ही इसके कुछ हिस्सों को ध्वस्त कर दिया गया था।
हालांकि शी जिनपिंग के नेतृत्व में यह भावना बनी रही कि यार्चेन गार सीसीपी के लिए खतरा है, और २०१७ और २०१९में यहां बड़े पैमाने पर विध्वंस किए गए, जिसका व्यापक अंतरराष्ट्रीय विरोध भी हुआ। उस समय हजारों भिक्षुणियों को 'पुनर्शिक्षा' के लिए शिविरों में भेजा गया था।

उसी समय, सीसीपी ने 'यार्चेन गार पर्यटन' के नाम पर एक जटिल खेल खेला। समय-समय पर, मठ के विध्वंस और भिक्षुणियों को निर्वासित करने के लिए पर्यटकों की आवाजाही बंद कर दी गई। इस दौरान, मठ परिसर के क्षेत्र पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकसित किए जाने की प्रक्रिया में रहे हैं। सीसीपी के ऐसे लोग, जो यार्चेन गार को अनगिनत अन्य धार्मिक स्मारकों की श्रेणी में देखना चाहते हैं, उनकी इच्छा के अनुरूप इस मठ को पर्यटकों के आकर्षण के केंद्र और इसे 'डिज़्नीफाइड' रूप में परिवर्तित कर दिया गया है, शायद वहां कुछ सीसीपी समर्थक भिक्षुणियों को छोड़ दिया गया है जो केवल पर्यटकों द्वारा फोटो खिंचने के लिए होंगी।
हालांकि, हाल ही में सीसीपी को यार्चेन गार में एक नई समस्या का सामना करना पड़ा है। तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) में सीसीपी द्वारा लगाई गई कोटा सीमा उन उपसंपदा वाली भिक्षुणियों की संख्या को सीमित करती हैं जिन्हें बौद्ध मठों में प्रवेश दिया जा सकता है। उपलब्ध जगह से ज्यादा लड़कियां भिक्षुणी बनना चाहती हैं। कोविडऔर गहन सीमा निगरानी अब इन लड़कियों के भारत या नेपाल जाने और वहां के मठों में उप संपदा दीक्षा ग्रहण करने की संभावना को सीमित कर देती है।
उनके लिए एकमात्र विकल्प टीएआर के बाहर चीन में ही मठ की तलाश करना है। विध्वंस के बावजूद, यार्चेन गार अभी भी एक बड़ा मठ और एक प्रतिष्ठित संभावना है। यह बताता है कि क्यों टीएआर की सैकड़ों बौद्ध लड़कियां सिचुआन के यार्चेन गार में भिक्षुणी बनने की उम्मीद में गईं।
हालांकि, सीसीपी इसे तिब्बत में बौद्ध भिक्षुणियों की संख्या को सीमित करने वाले नियमों के परिणामों से बचने के लिए एक बचाव के रूप में देखती है। पिछले कुछ हफ्तों में यार्चेन गार को पर्यटकों के लिए फिर से सख्ती से बंद कर दिया गया है और टीएआर से उपसंपदा दीक्षा ग्रहण करने के लिए आई लड़कियों को बसों में डाल कर वापस टीएआर में भेज दिया गया है। हालांकि उन्हें उनके घर पर नहीं भेजा गया। उन्हें 'पुनर्शिक्षा के लिए शिक्षा शिविरों' में डाल दिया गया है। ऐसा कर वे यह दिखाना चाहते हैं कि आप सीसीपी के लंबे हाथों से बच नहीं सकती हैं।

• धर्मशाला में सीटीए के नेतृत्व में तिब्बतियों ने भारत का ७६वां स्वतंत्रता दिवस मनाया

Tibet.net१६ अगस्त २०२२

धर्मसाला तिब्बती सेटलमेंट अफसर कुंचोक मिगमार।

धर्मशाला। धर्मशाला में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के नेतृत्व में तिब्बती समुदाय ने भारत की आजादी के ७५साल पूरे होने के उपलक्ष्य में तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान (टीआईपीए) में ७६वां भारतीय स्वतंत्रता दिवस मनाया।

धर्मशाला में तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय द्वारा आयोजित समारोह में कांगड़ा-चंबा के सांसद श्री किशन कपूर ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। समारोह में डीसी, एसपी, मेयर, डिप्टी मेयर, पार्षदों जैसे स्थानीय भारतीय प्रशासकों और भारत-तिब्बत मैत्री संघ के क्षेत्रीय सदस्यों ने भाग लिया।

समारोह में शामिल अतिथियों में प्रोटेम चीफ जस्टिस कमिश्नर कर्मा दादुल, सिक्योंग पेन्पा छेरिंग, कालोन थरलाम डोल्मा चांगरा, कालोन नोरज़िन डोल्मा, निर्वासन में १७वीं तिब्बती संसद की स्थायी समितियों के सदस्य, चुनाव और लोक सेवा आयुक्त वांगदु छेरिंग पेसुर, महालेखा परीक्षक पेमा दादुल आर्य और सचिव भी थे।

स्वतंत्रता दिवस पर अपनी अभिनंदन टिप्पणी में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने सीटीए और तिब्बती लोगों की ओर से भारत सरकार और उसके लोगों के समर्थन के लिए उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। सिक्योंग ने स्वतंत्रता के लिए उपनिवेशवादियों के खिलाफ लड़ाई लड़नेवाले भारत के उन बहादुर शहीदों को याद करते हुए स्वतंत्रता के बाद विभिन्न नेतृत्वों के तहत भारत में भारी विकास की सराहना की। इसके अलावा, निकट भविष्य में तिब्बत में उत्सव मनाने के लिए इसी तरह के दिन की उम्मीद करते हुए सिक्योंग ने कहा, 'तिब्बत के अंदर और बाहर तिब्बतियों द्वारा किए गए बलिदान भी भविष्य में फल देंगे।'

मुख्य अतिथि श्री किशन कपूर ने स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान कहा कि तिब्बत भी एक दिन अपनी स्वतंत्रता का जश्न मनाएगा।

कार्यक्रम के दौरान, सीटीए के कशाग ने रात्रिभोज का आयोजन किया जहां टीपा के तिब्बती कलाकारों ने भारतीय और तिब्बती नृत्य और संगीत का प्रदर्शन किया।

एपीआईपीएफटी और सीजीटीसी-आईने तिब्बती मुद्दे को मजबूत करने के लिए बैठक बुलाई

Tibet.net०५अगस्त २०२२

भारतीए सांसद और तिब्बत समर्थक समूहों की कोर कमिटी की बैठक।

०३ अगस्त २०२२, नई दिल्ली। भारत में तिब्बत समर्थक समूहों के शीर्ष समन्वय निकाय- कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया (सीजीटीसी-आई) की पहल पर तिब्बत के लिए अखिल भारतीय सर्वदलीय संसदीय मंच (एपीआईपीएफटी) और कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज़-इंडिया के सदस्यों की बैठक का आयोजन ०३ अगस्त २०२२ की शाम को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (आईआईसी), नई दिल्ली में किया गया।

सीजीटीसी-आई के राष्ट्रीय संयोजक श्री आर के खिरमेने बैठक की शुरुआत में माननीय संसद सदस्यों, सीजीटीसी-आई सदस्यों और अन्य सदस्यों का स्वागत कियाऔर उन्हें भारत में तिब्बत समर्थक समूहों, कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज़-इंडिया, परम पावन दलाई लामा, निर्वासित तिब्बती सरकार (केंद्रीय तिब्बती प्रशासन) और निर्वासित तिब्बती संसद के बारे में जानकारी दी।

एपीआईपीएफटी के संयोजक सांसद श्री सुजीत कुमार ने बैठक की अध्यक्षता की और तिब्बत के लिए ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंट्री फोरम, इसकी स्थापना से लेकर वर्तमान समय तक की पृष्ठभूमि, अतीत में मंच से जुड़े महत्वपूर्ण व्यक्तित्व जैसे एम सी छागला, जॉर्ज फर्नांडीस, रबी राय और मोहन सिंह के साथ ही तिब्बती आंदोलन से जुड़े निजलिंगप्पा और अटल बिहारी वाजपेयी जैसे उत्साही तिब्बत समर्थकों के बारे में परिचय दिया। उन्होंने तिब्बत और तिब्बतियों के साथ अपने जुड़ाव के बारे में भी जानकारी दी। ओडिशा से आने वाले साथियों को उन्होंने स्पेशल फ्रंटियर फोर्स (एसएफएफ) की स्थापना में ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय बीजू पटनायक के योगदान को भी याद किया। उन्होंने २००९में तिब्बत की उनकी यात्रा के बारे में भी उल्लेख किया जब उन्होंने तिब्बत में परम पावन दलाई लामा के लिए तिब्बती लोगों की भक्ति को देखा।खुद को परम पावन दलाई लामा के दो बार (धर्मशाला और ओडिशा) दर्शनों के लिए धन्य माना।

श्री सुजीत कुमार ने २०१४की तिब्बती पुनर्वास नीति पर प्रकाश डाला और भारत में तिब्बती शरणार्थियों और बस्तियों के कल्याण, तिब्बत के पर्यावरण की सुरक्षा और परम पावन १४वें दलाई लामा के पुनर्जन्म के संबंध में विचारणीय बिंदु रखे।

माननीय सदस्यों ने तिब्बत के लिए सर्वदलीय भारतीय संसदीय मंच को मजबूत करने पर चर्चा की और तिब्बती मुद्दों पर काम करने के लिए समय-समय पर मंच की बैठक करने का सुझाव दिया। वे परम पावन दलाई लामा को भारत रत्न से सम्मानित करने के लिए भारत सरकार से अनुरोध करने और भारत की संसद में परम पावन दलाई लामा द्वारा एक संबोधन दिए जाने के लिए अनुरोध करने के लिए एक साथ सहमत हुए।

माननीय सदस्यों ने अपने-अपने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में स्थित तिब्बती बस्तियों का दौरा करने का सुझाव दिया और तिब्बती लोकतंत्र दिवस और तिब्बती संसद सत्र, परम पावन दलाई लामा के नोबेल शांति पुरस्कार, वर्षगांठआदि जैसे विशेष अवसरों के दौरान निर्वासित तिब्बतियों के मुख्यालय धर्मशाला जाने का भी सुझाव दिया।

माननीय सदस्यों ने दोहराया कि वे सभी तिब्बत और तिब्बती लोगों के साथ हैंऔर कहा कि तिब्बती मुद्दे को जीवित रखा जाना चाहिए और सभी को तिब्बत का समाधान होने तक प्रयास करते रहना चाहिए।

बैठक के दौरान उपस्थित माननीय संसद सदस्यों में ओडिशा से एपीआईपीएफटी के संयोजक सुजीत कुमार, बिहार से सुशील कुमार मोदी और अनिल हेगड़े, उत्तर प्रदेश से राजेंद्र अग्रवाल और अशोक वाजपेयी, अरुणाचल प्रदेश से तपीर गाओ, कर्नाटक से लहर सिंह सिरोया, हिसे लाचुंगपा, सिक्किम से इंद्रा हैंग सुब्बा

और गोवा से विनय तेंदुलकर प्रमुख थे।
बैठक के दौरान राष्ट्रीय संयोजक श्री आर के खिरमे के नेतृत्व मेंकोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज़-इंडिया के १४सदस्य, भारत- तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) के समन्वयक (कार्यवाहक) तेनज़िन जॉर्डन और एपीआईपीएफटी समन्वयक चोनी छेरिंग भी उपस्थित थे।

• तिब्बती बस्तियों ने भारत की आजादी के ७५साल पूरे होने का जश्न मनाया

Tibet.net, १६ अगस्त २०२२

भारत की आजादी जश्न।

धर्मशाला। डलहौजी में फुंटसोकलिंग तिब्बती बस्ती के लगभग ६०तिब्बतियों ने इस क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के भूजल के सूखने और तापमान में वृद्धि जैसे प्रभावों को रोकने के उपायों के तहत परमदम डलहौजी और डलहौजी पब्लिक स्कूल के पास के क्षेत्रों में वृक्षारोपण कर भारत की आजादी के ७५साल का जश्न मनाया। इन क्षेत्रों में इस साल मई में भीषण जंगली आग लग गई थी।
इस अवसर पर टीएसओ के सेटलमेंट अधिकारी और कर्मचारी, उमायलम के सदस्य, क्षेत्रीय तिब्बती युवा संघ, क्षेत्रीय तिब्बती महिला संघ और तिब्बती निवासियों ने परमदम डलहौजी में ३१०पौधे लगाए। इन समूहों ने स्थानीय एनजीओ रमनिया डलहौजी से ५२०पौधे मांगे थे।
डलहौजी से कुछ मील दूर बीर तिब्बती बस्ती में मुख्य अतिथि बीर चौगन प्रधान मैडम निगेश ठाकुर ने इस अवसर पर भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया और सभा को संबोधित किया।
इसी तरह, दिल्ली में तिब्बती समुदाय ने १५अगस्त २०२२ को भारत के ७५वें स्वतंत्रता दिवस को गर्व और सम्मान के साथ मनाया। दुनिया भर में भारतीय भाई-बहन भारतीय इतिहास के इस महत्वपूर्ण दिन को मनाते हैं।
सम्यलिंग में डे स्कूल सम्यैलिंग के मैदान में भारी जनसमूह के बीच कार्यक्रम की शुरुआत हुई और डे स्कूल के छात्र-छात्राओं और मुख्य अतिथि चांदनी चौक, विधानसभा के विधायक श्री परलाद सिंह साहनी ने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया। इस दौरान टीएसओ सचिव जिग्मे छेतेन, एफटीएम अध्यक्ष थुप्टन ला, बुद्ध विहार आरडब्ल्यूए के प्रतिनिधि, तिब्बती युवा कांग्रेस दिल्ली, आरटीडब्ल्यूए दिल्ली और कई अन्य गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर निर्वासित तिब्बती संसद के पूर्व डिप्टी स्पीकरआचार्य येशी फुंटसोक विशेष अतिथि थे और उन्होंने सभा को भी संबोधित किया। यहां दिल्ली ब्यूरो ऑफिस के प्रतिनिधि, संयुक्त सचिव संगमो और कर्मचारी भी उपस्थित रहे।
कुल्लू में तिब्बतियों ने स्थानीय अध्यक्ष पुष्पा देवी के साथ इस समारोह को संक्षिप्त रूप से मनाया। इसी तरह, पोंटा में तिब्बतियों ने एसडीएम विवेक महाजन को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया और डीएसपी बीर बहादुर, तहसीलदार वेद प्रकाश, एमसी की अध्यक्ष निर्मल कौर, बीडीओरवि जोशी, एमसी के उपाध्यक्ष ओपी कटारिया सहित अन्य विशिष्ट अतिथियों ने औपचारिक कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर गाला डिनर और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।
कलिम्पोंग में राय बहादुर तिब्बती बस्ती कार्यालय परिसर में भारत का ७५वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया और इस अवसर पर विधायक श्री रुडेन सदा लेपचा, नगर पालिका के उपाध्यक्ष श्री भीम अग्रवाल, डीएसपी श्री जुगल चंद्र विश्वास, सेवानिवृत्त कर्नल रिनचेन दामदुल, भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) के सचिव लोबसांग तमांग और नीमा वांगडी भूटिया ने शोभा को बढ़ाया। यहां गंगजोंग ढोघर के कलाकारों ने सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत किया।
मेघालय के शिलांग में तिब्बती बंदोबस्त कार्यालय ने श्रीमती दलिक्यंती खर्शिंग (अतिरिक्त उपायुक्त), डॉ. अड्रिना लिंगदोह (जिला चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी), श्री एम. मारबानियांग (कार्यकारी अभियंता, पर्यटन विभाग), श्री बी लिंगदोह (सहायक कार्यकारी अभियंता) और तिब्बती समुदाय के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में समारोह का आयोजन किया। स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान तिब्बती बंदोबस्त अधिकारी पेमा धोंडुप ने तिब्बतियों के प्रति समर्थन और उनके आतिथ्य के लिए भारत सरकार को धन्यवाद दिया। कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में उन्होंने विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।
इसके अलावा, मेघालय सरकार के उपायुक्त कार्यालय से प्राप्त निमंत्रण के अनुसार, तिब्बती बंदोबस्त अधिकारी ने १५अगस्त, २०२२को पोलो ग्राउंड, शिलांग में राज्य के आधिकारिक कार्यक्रम में भाग लिया।
पुरुवाला तिब्बती बंदोबस्त कार्यालय ने १४अगस्त २०२२ को शाक्य तिब्बती बस्ती हॉल में ७५वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या का आयोजन किया। श्री कुणाल अंगरीश (डीएफओ) पांवटा साहिब इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे।शाक्य तिब्बती संस्थान पुरुवाला के महंथ, ग्राम प्रधान, भारत-तिब्बत मैत्री संघ के सदस्य और भारतीय अधिकारी, तिब्बती अधिकारी, कर्मचारी और अन्य अतिथि भी समारोह में उपस्थित रहे।
आधिकारिक समारोह की शुरुआत मुख्य अतिथि द्वारा भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ हुई और उसके बाद पुरुवाला शंभूत स्कूल के बैंड का भारतीय राष्ट्रगान हुआ।
बंदोबस्त अधिकारी श्री तेनज़िन लेक्षय ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने भारत में रहने वाले तिब्बतियों को दिए अटूट समर्थन और उदार आतिथ्य के लिए भारत सरकार और यहां की जनता को धन्यवाद दिया।
यहां मुख्य अतिथि श्री कुणाल ने सभा को संबोधित किया और कहा कि तिब्बती भारत के 'अतिथि देवो भव' और भारत के सच्चे मित्र हैं।
समारोह के बाद शाक्य तिब्बती संस्थान पुरुवाला के उपाध्याय द्वारा मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह देकर आभार व्यक्त किया गया। पुरुवाला संभूत स्कूल के बच्चों ने कई तिब्बती सांस्कृतिक नृत्य और हिंदी में देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए।
मियाओ चोफेलिंग बस्ती में बस्ती नेतृत्व और तिब्बती निवासियों ने स्वतंत्रता दिवस पर कार्निवाल परेड में भाग लेने वाले लोगों को जलपान और अल्पाहार कराया। यहां उपस्थित लोगों में सरकारी निकायों के अधिकारियों सहित कई प्रमुख हस्तियां और गणमान्य व्यक्ति थे।

अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के सदस्य बावा ने सदन की अध्यक्ष नैन्सी पेलोसी की मानवाधिकारों और लोकतंत्र समर्थक कार्यकर्ताओं के साथ बैठक में तिब्बत का मुद्दा उठाया

Tibet.net, ०४अगस्त २०२२

श्रीमती नैंसी पेलोसी और प्रतिनिधि कालसँग ग्यालत्सेन

ताइवान। बीजिंग की ओर से बहुत आलोचना और धमकी मिलने के बावजूद अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की अध्यक्ष नैन्सी पेलोसी के नेतृत्व वाले पांच डेमोक्रेटिक सांसदों के प्रतिनिधिमंडल ने मंगलवार को ताइवान का दौरा किया। पेलोसी ०२ अगस्त १९९७ के बाद से इस देश का दौरा करने वाली पहली उच्चस्तरीय अमेरिकी अधिकारी बन गई।

ताइवान से प्रस्थान की पूर्व संध्या पर ०३ अगस्त को स्पीकर पेलोसी ने ताइवान में मानवाधिकार राष्ट्रीय संग्रहालय में सात मानवाधिकार कार्यकर्ताओं से मुलाकात की, जिसमें लोकतंत्र समर्थक कार्यकर्ता वूर कैक्सी, ताइवान के मानवाधिकार कार्यकर्ता श्री ली मिंगज़े, चीन द्वारा उत्पीड़ित हांगकांग में कॉज़वे बे बुकस्टोर के श्री लिन रोंगजीऔर ताइवान में तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि श्री केल्सांग ग्यालत्सेन शामिल थे। इन लोगों ने लोकतंत्र और मानवाधिकारों से जुड़े विभिन्न विषयों पर एक घंटे की गोलमेज चर्चा की।

स्पीकर नैन्सी पेलोसी ने ताइवान के लोगों को चीनी तानाशाही से अवगत कराने और ताइवान के लोकतंत्र की रक्षा करने के लिए एकत्रित मानवाधिकार रक्षकों का आह्वान किया।

प्रतिनिधि केलसांग ग्यालत्सेन ने तिब्बत में बिगड़ती मानवाधिकार स्थिति और सीसीपी द्वारा तिब्बत में जातीय, धार्मिक और सांस्कृतिक संहार की बढ़ती चरम नीति से स्पीकर पेलोसी को अवगत कराया। उन्होंने उन्हें सीसीपी की तथाकथित बोर्डिंग स्कूल तकनीक से भी अवगत कराया, जो तिब्बती बच्चों को उनके माता-पिता से दूर बोर्डिंग स्कूलों में पढ़ने के लिए मजबूर करती है। इस प्रकार अन्य मुद्दों के साथ चीन की यह नीति तिब्बती संस्कृति और धर्म को आत्मसात करती है। उन्होंने अक्तूबर में होने वाली वैश्विक लोकतंत्र सम्मेलन में परम पावन दलाई लामा को आमंत्रित करने का संयुक्त आयोजकों का आह्वान किया। प्रतिनिधि केलसांग ने कहा कि यह सीसीपी को तिब्बत के लिए वैश्विक एकजुटता का स्पष्ट और मजबूत संदेश देगा।

वर्तमान सीसीपी के राष्ट्रपति शी जिनपिंग का तिब्बत के प्रति दृष्टिकोण, तथाकथित 'तिब्बत के शासन पर पार्टी की नई पीढ़ी की नीति' तिब्बती लोगों के संहार और पूरी नस्ल को आत्मसात करने के साथ-साथ तिब्बत में दलाई लामा के प्रभाव को समाप्त करने पर केंद्रित है। इन उपायों ने तिब्बतियों के और भी मजबूत प्रतिरोध को उभारा है। ताइवान में परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधि ने कहा कि तिब्बत अब एक 'संहारक जेल' बन गया है।

उन्होंने आगे इस बात पर जोर दिया कि भले ही दुनिया यूक्रेन संकट की चपेट में है, तिब्बत में दशकों से चल रहे नरसंहार पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए और तिब्बत मुद्दे को और समर्थन मिलना चाहिए। जब तिब्बत पर कब्जा किया जा रहा था, तब अंतरराष्ट्रीय समुदाय से समर्थन और ध्यान की प्रारंभिक कमी पर शोक व्यक्त करते हुए प्रतिनिधि ने उल्लेख किया कि जिस तरह रूस पर अब अंतरराष्ट्रीय समुदाय दबाव डाल रहा है, अगर इसी तरह से चीन पर उस समय दबाव डाला गया होता तो चीजें अलग तरह की हो सकती थीं। प्रतिनिधि ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार परिषद में सदस्य होने के कारण रूस की जितनी आलोचना हुई हैं, उतनी चीन की भी होनी चाहिए थी। उन्होंने कहा कि चीन भी उपहास का पात्र है और मानवाधिकारों के उल्लंघन और अवमूल्यन के चीन के रिकॉर्ड को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों में उसकी सदस्यता की आलोचना की जानी चाहिए।

उन्होंने आगे कहा कि कोई भी निश्चित नहीं हो सकता है कि एक स्वतंत्र, लोकतांत्रिक और मजबूत देश यूक्रेन में हुई त्रासदी ताइवान में नहीं दोहरायी जाएगी। केवल उस स्थिति में जब चीन खुद को एक पूर्ण लोकतंत्र में बदल लेता है, क्या हम वास्तव में सीसीपी के विनाशकारी नीति और ताइवान और बाकी दुनिया के लिए ख़तरे को ख़त्म कर सकते हैं?

अपने समापन भाषण में सांसद बावा ने भारत, अमेरिका, यूरोपीय देशों और ताइवान जैसे देशों के निरंतर समर्थन के लिए धन्यवाद दिया और स्पीकर पेलोसी और अमेरिकी सरकार से केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के साथ बातचीत के लिए सीसीपी पर दबाव बनाने का अनुरोध किया।

• अमेरिकी महावाणिज्य दूत जुडिथ रविन ने बाइलाकुप्पे तिब्बती बस्ती का दौरा किया

Tibet.net, १६ अगस्त २०२२

अमेरिकी महावाणिज्य दूत जुडिथ रविन तिब्बती बस्तियों का दौरा करते हुए।

बेंगलुरु। चेन्नई स्थित अमेरिकी वाणिज्य दूतावास की महावाणिज्यदूत जूडिथ रविन ने शनिवार१३ अगस्त को अपने वाणिज्य दूतावास की कर्मचारी और जन संपर्क विशेषज्ञ- सुश्री वृंदा जयकांत के साथ बाइलाकुप्पे तिब्बती बस्ती में नामद्रोलिंग मठ का संक्षिप्त दौरा किया। साथ ही अपनी इस निजी यात्रा में प्रतिनिधिमंडल ने दक्षिण भारत के प्रसिद्ध स्वर्ण मंदिर और मुख्य कैथेड्रल का भी दौरा किया और पूजा-अर्चना की।

इससे पहले आगमन परमहावाणिज्य दूतावास प्रतिनिधियों का स्वागत मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी श्री जिग्मे त्सुल्ट्रिम, बंदोबस्त अधिकारी श्री लोबसांग येशी और श्री चाइम दोरजी, लोपोन ग्युर्मे के सचिव और प्रबंध न्यासी आदरणीय टुल्कू चोदर, नामद्रोलिंग मठ के लोपोन तेनज़िन येशी और मद्रास

विश्वविद्यालय के पूर्व प्रो. रामू मणिवन्नन ने किया।
अपनी संक्षिप्त बातचीत के दौरानसुश्री रविन ने मठ के इतिहास और इसके विकास के बारे में स्थानीय निवासियों के संबंध में पूछताछ की। उन्होंने यूएसएआईडी और पीआरएम द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं की प्रगति, तिब्बती निवासियों को उनके लाभ और भविष्य में इन परियोजनाओं को आगे बढ़ाने के तरीकों के बारे में भी पूछा।
प्रतिनिधिमंडल के सेटलमेंट से प्रस्थान से पहले श्री त्सुल्ट्रीम ने मठ की यात्रा के लिए महावाणिज्य दूत को धन्यवाद दिया और तिब्बती लोगों और उनके संघर्ष के लिए अमेरिकी सरकार की ओर से अटूट समर्थन और एकजुटता के लिए भी आभार व्यक्त किया।

• प्रतिनिधि जेनखांग ने ताइवानी प्रतिनिधि से मुलाकात की

tibet.net०१ अगस्त २०२२

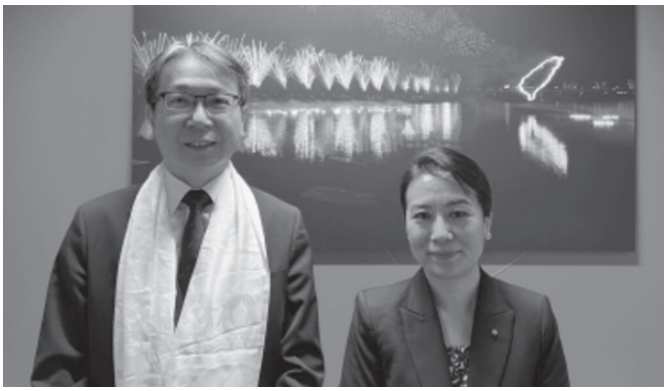

प्रतिनिधि रिगज़िन जेनखांग और ताइवान सरकार के प्रतिनिधि मिंग येन त्साई

निर्वासित तिब्बत सरकार की ब्रुसेल्स स्थित प्रतिनिधि रिगज़िन जेनखांग ने २७ जुलाई २०२२ को ताइवान सरकार के प्रतिनिधि मिंग येन त्साई से उनके कार्यालय में मुलाकात की। रिंगजिन द्वारा ब्रुसेल्स कार्यालय का पदभार संभालने के बाद से दोनों के बीच यह पहली व्यक्तिगत मुलाकात थी।

प्रतिनिधि जेनखांग ने प्रतिनिधित्साई को एक खता (पारंपरिक तिब्बती स्कार्फ) ओढ़ाई और उन्हें और उनके सहयोगियों को सीटीए के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग द्वारा प्रकाशित 'तिब्बत वाज़ नेवर ए पार्ट ऑफ चाइना' शीर्षक पुस्तक का उपहार दिया। इसके बाद उन्होंने मिंग येन त्साई को मुलाकात के लिए समय देने और वर्तमान पद पर उनकी नियुक्ति को लेकर बधाई-पत्र के लिए धन्यवाद दिया।इसके बाद परम पावन दलाई लामा की लद्दाख की चल रही यात्रा और तिब्बत की स्थिति पर संक्षिप्त चर्चा हुई।
प्रतिनिधि त्साई ने प्रतिनिधि जेनखांग की यात्रा के लिए उनके प्रति आभार प्रकट किया और प्रतिनिधि जेनखांग को यूरोपीय संघ के स्तर पर अपने कार्यालय द्वारा की गई विभिन्न पहलों के बारे में सूचित किया। अच्छे दोस्तों के रूप मेंउन्होंने कुछ अच्छी प्रथाओं के बारे में भी एक-दूसरे को जानकारी दी।
दोनों प्रतिनिधि कुछ क्षेत्रों पर मिलकर काम करने और दोनों कार्यालयों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों को गहरा करने पर सहमत हुए। तिब्बती संसदीय संपर्क प्रभाग के निदेशक केविन चिआओ और ताइवानी कार्यालय के द्वितीय सचिव चिह-वेई यू प्रतिनिधि त्साई से मुलाकात के दौरान थे।
ब्रुसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि त्साई के पूर्ववर्ती ताइवानी प्रतिनिधि हैरी त्सेंग के साथ भी उत्कृष्ट कार्य संबंध थे,जो अब ताइवान के उप विदेश मंत्री हैं।

• चेक गणराज्य ने तिब्बती लोगों के साथ संबंधों को मजबूत किया: प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने प्राग की पहली यात्रा पूरी की

Tibet.net, १२ अगस्त २०२२

प्रतिनिधि थिनले चुकी और तिब्बत के लिए सीनेट मैत्री समूह।

जिनेवा। तिब्बती प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने ०७ अगस्त से १०अगस्त, २०२२ तक की चेक गणराज्य की राजधानी प्रागकी चार दिवसीय यात्रा सफलतापूर्वक पूरी की। यह परम पावन दलाई लामा ब्यूरो और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की मध्य और पूर्वी यूरोप की प्रतिनिधि के रूप में स्विटजरलैंड के बाहर किसी अन्य देश की उनकी पहली यात्रा थी और इस तरह चेक गणराज्य यात्रा करने वाला पहला देश बना। इस यात्रा में उनके साथ तिब्बत ब्यूरो में संयुक्त राष्ट्र की एडवोकेसी अधिकारी सुश्री काल्डेन सोमो भी थीं।

यात्रा कार्यक्रम में चेक गणराज्य के प्राग में सरकारी अधिकारियों, सांसदों, नागरिक समूहों, थिंक टैंकों, तिब्बत समर्थक समूहों और तिब्बती समुदाय के साथ बैठकें शामिल थीं।

चेक गणराज्य के विदेश मामलों के उप मंत्री माननीय मार्टिन ड्वोरक के साथ अपनी बैठक में प्रतिनिधि थिनले ने अन्य बातों के साथ-साथ बैठक के लिए उप मंत्री को धन्यवाद दिया और तिब्बत के लिए लंबी मित्रता और एकजुटता के लिए चेक गणराज्य के प्रति तिब्बती लोगों का आभार व्यक्त किया।
माननीय मार्टिन ड्वोरक ने द्विपक्षीय संबंधों पर चेक गणराज्य का निरंतर समर्थन, साझा सकारात्मक स्थिति और विकास की भावना बनाए रखने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने मानवाधिकारों को चेक गणराज्य की प्रमुख प्राथमिकताओं में से एक के रूप में दोहरायाजो चेक और तिब्बत के बीच बहुत सारे साझा तत्वों में प्रमुख तत्व है।

चेक संस्कृति मंत्रालय के साथ चुक्की की बैठक के दौरानउप मंत्री माननीय ओंड्रेज क्रास्ट ने परम पावन दलाई लामा और पूर्व चेक राष्ट्रपति वेक्लेव हावेल की आजीवन मित्रता को याद किया। उन्होंने चेक गणराज्य के

स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के लिए अपने संबंधों को गहरा करके वैक्लेव हावेल की विरासत और परंपरा में लौटने का आश्वासन दिया। प्रतिनिधि ने उप मंत्री को धन्यवाद दिया और तिब्बत और चेक लोगों के बीच कला और संस्कृति के आदान-प्रदान के लिए समर्थन मांगा। उप मंत्री ने चुक्की को चैपल (छोटा चर्च) के आसपास की वह जगह भी दिखाई, जहां परम पावन दलाई लामा और पूर्व संस्कृति मंत्री ने एक साथ प्रार्थना की थी। इसके बाद प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने पूर्व संस्कृति मंत्री मैगर डैनियल हरमन के साथ लंच किया। हरमन वर्तमान में ब्रनो में लिकटेंस्टीन रियासत के मानद वाणिज्य दूत के रूप में सेवारत हैं।

सांसदों के साथ मुलाकात के गईं प्रतिनिधि थिनले चुक्की का स्वागत चेक सीनेट के उपाध्यक्ष माननीय जिरी ओबरफल्जर ने किया। माननीय जिरी ओबरफल्जर ने इस वर्ष की शुरुआत में तिब्बती राष्ट्रीय विद्रोह दिवस के अवसर पर धर्मशाला की अपनी यात्रा के अपने अनुभवों और यादगार पलों का उल्लेख किया। उन्होंने धर्मशाला में रहने के दौरान वहां मिले आतिथ्य, देखभाल और परम पावन दलाई लामा के दर्शन के समय उनके आशीर्वाद को याद किया। दोनों ने इस महीने के अंत में प्राग में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग की आसन्न यात्रा पर भी चर्चा की।

इसके अलावा प्रतिनिधि थिनले का स्वागत 'सीनेट फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत ग्रुप' के अध्यक्ष माननीय सीनेटर प्रेमिस्ल रबास ने किया।इसके बाद 'सीनेट ग्रुप फॉर तिब्बत' के सदस्यों के साथ एक गोलमेज बैठक हुई। सीनेटरों ने स्वतंत्रता और न्याय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और तिब्बत और तिब्बती लोगों के प्रति अपने अटूट समर्थन को दोहराया। सीनेटर राबास ने सत्र के दौरान सीनेट भवन और सीनेट हाउस का संक्षिप्त दौरा भी कराया। 'सीनेट ग्रुप फॉर तिब्बत' के साथ एक गोलमेज बैठक के बाद उन्होंने चेक सीनेट की उपाध्यक्ष माननीया जित्का सीट्लोवा से भी मुलाकात की। इस अवसर का लाभ उठाते हुए उन्होंने तिब्बत और उसके लोगों के लिए निरंतर समर्थन के लिए माननीय जित्का सीतलोवा को धन्यवाद दिया और उनके निरंतर समर्थन बनाए रखने के लिए अनुरोध किया।

चैंबर ऑफ डेप्युटीज के अध्यक्ष के विदेश नीति सलाहकार माननीय ज़ेडेनेक बेरानेक और अध्यक्ष के कार्यालय के प्रेस सचिव मैगर मार्टिन चुरावी ने चैंबर ऑफ डेप्युटीज में प्रतिनिधि थिनले चुक्की का स्वागत किया। माननीय ज़ेडेनेक ने बधाई दी और दोनों के बीच पारंपरिक संबंधों को मजबूत करने में घनिष्ठ सहयोग का आश्वासन दिया। इसके बादप्रतिनिधि थिनले ने चैंबर ऑफ डेप्युटीज में पाइरेट्स ग्रुप के अध्यक्ष माननीय जैकुप माइकलेक, प्राग शहर के असेंबली के सदस्य माननीय मिशेला क्रॉसोवा और पूर्व उप प्रधानमंत्री मार्टिन बर्सिक से मुलाकात की।

प्रतिनिधि थिनले ने तिब्बती समुदाय, तिब्बत समर्थक समूहों, प्राग स्थित नागरिक समाज समूहों से भी मुलाकात की।इनमें एमनेस्टी इंटरनेशनल और प्राग स्थित प्रमुख थिंक टैंक सिनॉप्सिस के निदेशक डॉ मार्टिन हला और उनके सहयोगी डेविड गार्डास शामिल हैं।

• वैश्विक जिम्मेदारी की भावना तिब्बती संस्कृति का दुनिया को सबसे बड़ा योगदान है: हॉलीवुड स्टार रिचर्ड गेर

Theprint.in, ११ अगस्त, २०२२

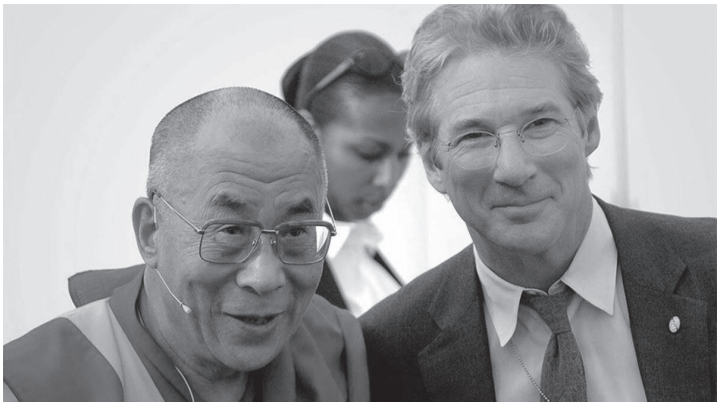

परम पवन दलाई लामा और रिचर्ड गेर।

ल्हासा (तिब्बत), ११ अगस्त (एएनआई)। सार्वभौमिक जिम्मेदारी का १४वें दलाई लामा का विचार एक वैश्विक जिम्मेदारी है जिसे हर इंसान को आत्मसात कर लेना चाहिए। यह आज की दुनिया में तिब्बती संस्कृति का सबसे बड़ा योगदान है। यह बातें हॉलीवुड अभिनेता रिचर्ड गेर ने कही। वह इस महीने की शुरुआत में भारत में निर्वासित तिब्बती सरकार के मुख्यालय धर्मशाला में दलाई लामा के ८७वें जन्मदिन समारोह में विशेष अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

तिब्बत राइट्स कलेक्टिव रिपोर्ट के अनुसार गेर ने कहा, 'बोधिसत्व के इस आदर्श और सार्वभौमिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देकर तिब्बतियों ने जो हासिल किया है, वह दुनिया के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे ब्रह्मांड के लिए महत्वपूर्ण है।'

उनका मानना है कि वैश्विक जवाबदेही का विचार यह है आज दुनिया में तिब्बती संस्कृति का सबसे बड़ा योगदान है और मानवता तिब्बती संस्कृति से प्राप्त ऐसे मूल्यों से लाभान्वित हो सकती है।

गेर के अनुसार, परम पावन और तिब्बती संस्कृति से दुनिया सबसे महत्वपूर्ण मूल्य और सबक सीख सकती है। यह काम तिब्बती बौद्ध धर्म और संस्कृति को आप्लावित करने वाली परस्पर की एकता और जिम्मेदारी की गहरी भावना को समझकर किया जा सकता है। तिब्बत, तिब्बत के नेता और तिब्बती मुद्दों के लिए दलाई लामा के अभियान के पीछे यह प्रमुख शक्ति और ओज रहा है।गेरे तिब्बत के लिए काम करके इस ताकत को बचाने की संभावना और सार्वभौमिक भाईचारे की संभावना देखते हैं। गेर के अनुसार, 'तिब्बत को बचाने के लिए काम करते हुए आप इस संभावना को भी बचाते हैं कि हम सभी भाई-बहन हैं।'

चीनी सरकार ने लगातार मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को या देश में लोकतंत्र का समर्थन करने और इसके लिए आवाज उठाने वाले हरेक व्यक्ति को निशाना बनाया है।

लेकिन हॉलीवुड अभिनेता रिचर्ड गेर धमकियों और प्रतिबंधों को नजरअंदाज करके हमेशा अत्याचार के खिलाफ खड़े रहे हैं और तिब्बती स्वतंत्रता के कारण और बौद्ध साधना के मूल्यों के बारे में अधिक जागरूकता फैला रहे हैं।

गेर ने कहा कि उनकी भूमिकाओं में तिब्बत पर चीन के कब्जे के खिलाफ उनकी आलोचना में आंशिक कमी है। उनकी राय में, हॉलीवुड चीन को नाराज करने से डरता है क्योंकि चीन इस समय दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा बॉक्स ऑफिस बाजार है।

तिब्बत के लिए गेर की सक्रियता में सबसे निर्णायक क्षण १९९३ का अकादमी

पुरस्कार समारोह आया, जब उन्होंने इस मंच का उपयोग तिब्बत में चल रहे मानवाधिकारों के हनन के बारे में बात करने के लिए किया।: उन्होंने तब अपने मूल संबोधन से हटकर कहा,'इस बात की जानकारी होने के बाद मुझे आश्चर्य हुआ है कि चीन (और तिब्बत) में मानवाधिकारों की कितनी वीभत्स और भयावह स्थिति है।क्या हम अभी बीजिंग में देंग शियाओपिंग को प्यार और सच्चाई और विवेक जगाने का पैगाम भेज सकते हैं।अगर संभव हो तो वे अपने सैनिकों को तिब्बत से वापस ले जाएं और इन लोगों को फिर से स्वतंत्र और आजाद लोगों की तरह रहने दें।'
आश्चर्य की बात नहीं कि चीन इसे हल्के में लेने के लिए तैयार नहीं था। चीन ने अभिनेता को ताउम्र चीन आने और भविष्य वहां ऑस्कर प्रसारण को प्रतिबंधित कर दिया।

२००८के बीजिंग ओलंपिक से पहले रिचर्ड गेर ने तिब्बती लोगों का चीन द्वारा उत्पीड़न के बारे में 'सत्य उजागर करने' का आह्वान किया। उन्होंने अपनी मांग दोहराई कि तिब्बत में मानवाधिकार की स्थिति के संबंध में और अधिक पारदर्शिता की आवश्यकता है। तब तक आप ओलंपिक में भाग नहीं ले सकते हैं और चीन में नकारात्मक क्या हो रहा है, इसके बारे में बात नहीं कर सकते हैं।'

गेर ने १९७०के दशक के अंत में तब बौद्ध धर्म ग्रहण किया, जब उन्होंने नेपाल और भारत की यात्रा की और वहां उन्होंने कई तिब्बती बौद्ध भिक्षुओं से मुलाकात की। तिब्बत राइट्स कलेक्टिव रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में दलाई लामा से मिलने के बाद वह तिब्बती बौद्ध धर्म के गेलुग्पा स्कूल के तिब्बती बौद्ध और परम पावन के सक्रिय अनुयायी और समर्थक बन गए।

गेर तिब्बत हाउस यूएस के सह-संस्थापक और अध्यक्ष भी हैं, जिसकी स्थापना १९८७ में तिब्बती कला, संस्कृति और दर्शन को संरक्षित करने के लिए हुई थी। वह १९९२ में इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत के निदेशक मंडल में शामिल हुए। वह १९९५से इसके बोर्ड अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे हैं।
रिचर्ड गेर द्वारा स्थापित गेर फाउंडेशन तिब्बत और तिब्बती लोगों के सांस्कृतिक संरक्षण के लिए समर्पित समूहों को अनुदान देता है। यह दुनिया भर में फैले ऐसे संगठनों को भी अनुदान देता है,जो एचआईवी/ एड्स की देखभाल, इस पर अनुसंधान और इसका उपचार प्रदान करने के लिए समर्पित हैं और उन संगठनों को भी जो दुनिया भर में मानवाधिकारों के हनन के खिलाफ काम करते हैं। गेर फाउंडेशन उन संगठनों को भी अनुदान प्रदान करता है जो तिब्बत के लिए काम करते हैं, जिनमें इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत, स्टूडेंट्स फॉर फ्री तिब्बत और तिब्बतन चिल्ड्रेन विलेजेज शामिल हैं।
गोल्डन ग्लोब विजेता को हॉलीवुड उद्योग से प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा है और तिब्बत पर अपने मुखर रुख के कारण अति-राष्ट्रवादी चीनी साइबर सेना के गुस्से का सामना करना पड़ रहा है।

हालांकि, अभिनेता ने सार्वभौमिक जिम्मेदारी की अपनी मजबूत भावना पर किसी भी चीज और किसी को भी हावी होने देने से इनकार कर दिया है और वह दुनिया के तीसरे ध्रुव और इसके निवासियों और इसके निर्वासित नेता को उनकी मातृभूमि में फिर से बसाने की लालसा लिए खड़ा है। (एएनआई)

• यह रिपोर्ट एएनआई समाचार सेवा से जारी की गई है। इसकी सामग्री के लिए दप्रिंट की कोई जिम्मेदारी नहीं है।

संयुक्त राष्ट्र के रिपोर्टियर को तिब्बत और झिंझियांग में जबरन श्रम के साक्ष्य मिले
Voanews.org, १७ अगस्त २०२२

चीनी कारावास

गुलामी के समकालीन रूपों पर संयुक्त राष्ट्र के विशेष दूत (स्पेशल रिपोर्टियर) तोमोया ओबोकाटा द्वारा जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, चीन के झिंझियांग और तिब्बत में उग्यूर, कज़ाख और अन्य नस्लीय समूहों से जबरन श्रम करवाया जा रहा है।
अमेरिकन सिविल लिबर्टीज यूनियन के अनुसार, स्पेशल रिपोर्टियर संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद द्वारा नियुक्त स्वतंत्र विशेषज्ञ हैं, जिन्हें विशेष संबंध, विशिष्ट देशों में मानवाधिकार स्थितियों और दुनिया भर में मानवाधिकारों के उल्लंघन को लेकर निगरानी करने, सलाह देने और सार्वजनिक रूप से रिपोर्ट करने का अधिकार है।
रिपोर्ट में कहा गया है,'इसके अलावा जबरन श्रम के दौरान पीड़ित श्रमिकों पर प्रयोग की जाने वाली शक्तियों की प्रकृति और सीमा को देखते हुएअत्यधिक निगरानी, अपमानजनक जीवन और काम करने की स्थिति, नजरबंदी के माध्यम से आवागमन पर प्रतिबंध, धमकियों, शारीरिक और/या यौन हिंसा और अन्य अमानवीय या अपमानजनक स्थितियों सहितकई ऐसे उदाहरण हो सकते हैं जो मानवता के खिलाफ अपराध और दासता की श्रेणी में आते हैं। और इनके स्वतंत्र विश्लेषण की आवश्यकता है।'
रिपोर्ट के अनुसार, चीन ने दो प्रांतों- झिंझियांग में स्थानीय लोगों से जबरन श्रम करवाने के लिए अनिवार्य प्रणालियों को लागू कर रखा है। वहां व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों के माध्यम से एक प्रणाली है जहां 'अल्पसंख्यकों को हिरासत में लिया जाता है और काम पर रखा जाता है।' झिंझियांग में 'श्रम हस्तांतरण के माध्यम से गरीबी उन्मूलन' की एक विधि तैयार की गई है। यह विधि अधिशेष (सरप्लस) ग्रामीण मजदूरों को दोयम या तीसरे दर्जे के कार्य क्षेत्रों के काम में' लगाती है।

रिपोर्ट में यह भी स्पष्ट किया गया है कि तिब्बत में भी इसी तरह की जबरन श्रम प्रणाली लागू की गई है 'जहां एक व्यापक श्रम हस्तांतरण कार्यक्रम के तहत मुख्य रूप से किसानों, चरवाहों और अन्य ग्रामीण मजदूरों को कम-कुशल और कम वेतन वाले रोजगार में स्थानांतरित कर दिया गया है।'
बीजिंग ने इन कार्यक्रमों को अल्पसंख्यकों के लिए उनकी आय बढ़ाने के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने के तरीके के रूप में वर्णित किया है। लेकिन रिपोर्ट में

कहा गया है कि झिंझियांग और तिब्बत में कई मामलों में 'प्रभावित समुदायों द्वारा किए गए काम अनैच्छिक प्रकृति' के है।
बीजिंग ने इन कार्यक्रमों को अल्पसंख्यकों के लिए उनकी आय बढ़ाने के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने के तरीके के रूप में वर्णित किया है। लेकिन रिपोर्ट में कहा गया है कि झिंजियांग और तिब्बत में कई मामलों में "प्रभावित समुदायों द्वारा किए गए काम की अनैच्छिक प्रकृति" मौजूद है।
कुछ थिंक टैंक, अधिकार समूहों और अमेरिका ने हाल के वर्षों में चीन पर उग्यूरों से जबरन श्रम कराने का आरोप लगाया है। जून में अमेरिकी सरकार ने झिंझियांग से जबरन श्रम से संबंधित उत्पादों के आयात पर प्रतिबंध लगाने के लिए उग्यूर जबरन श्रम रोकथाम अधिनियम लागू किया।
बीजिंग लंबे समय से झिंझियांग में जबरन मजदूरी के आरोपों से इनकार करता रहा है और कहा है कि इस क्षेत्र में श्रम व्यवस्था केवल गरीबी उन्मूलन के लिए है और विभिन्न नस्लीय समूहों के लोग स्वतंत्र रूप से अपना काम चुन सकते हैं।

अमेरिका के आरोप

चीन पर कांग्रेस-कार्यकारी आयोग ने एक ट्विटर पोस्ट में कहा कि रिपोर्ट में 'उग्यूरों, कजाखों और अन्य लोगों से कराए जा रहे जबरन श्रम की तुलना गुलामी के समकालीन रूप के तौर पर की गई है और सभी देशों से उग्यूर जबरन श्रम रोकथाम अधिनियम के समान कानून बनाने की दिशा में उचित परिश्रम करने का आग्रह की जाती है।'
वाशिंगटन स्थित उग्यूर ह्यूमन राइट्स प्रोजेक्ट (यूएचआरपी) ने 'यूएन ऑफिस ऑन जेनोसाइड प्रिवेंशन' से आग्रह किया कि 'यूएन विशेषज्ञ की रिपोर्ट के आलोक में उग्यूरों और अन्य तुर्क लोगों की समस्या के समाधान का तुरंत आकलन करें और उचित सुझाव दें। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि चीनी सरकार की कार्रवाई दासता के बराबर हो सकती है जिसे मानवता के खिलाफ अपराध के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।'
यूएचआरपी के कार्यकारी निदेशक ओमर कनाट ने कहा, 'संयुक्त राष्ट्र स्तर पर चीनी सरकार के खिलाफ मामला बनता जा रहा है।' संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों और सदस्य देशों के लिए अब इन अत्याचारों की अनदेखी करना असंभव होता जा रहा है।'

चीन की प्रतिक्रिया

चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता वांग वेनबिन ने बुधवार को ओबोकाटा की आलोचना करते हुए कहा कि उन्होंने 'अपने अधिकार का दुरुपयोग करने, विशेष प्रक्रिया की आचार संहिता का स्पष्ट रूप से उल्लंघन करने और चीन को बदनाम और कलंकित करने' का काम किया है।
बीजिंग में एक संवाददाता सम्मेलन में वांग ने कहा, 'पूर्व नियोजित स्पेशल रिपोर्टियर ने झिंझियांग के बारे में अमेरिका और कुछ अन्य पश्चिमी देशों और चीन विरोधी ताकतों द्वारा फैलाए गए झूठ और दुष्प्रचार पर ही विश्वास किया है।' उन्हें पता होना चाहिए कि झिंझियांग में 'जबरन श्रम कभी नहीं कराया गया है।'झिंझियांग में चीनी सरकार एक जन-केंद्रित विकास दर्शन का अनुसरण करती है और श्रमिकों के अधिकारों और हितों की रक्षा को बहुत महत्व देती है।'

पिछले शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) में आयोजित एक समारोह में चीन के संयुक्त राष्ट्र में राजदूत ने जबरन श्रम पर आईएलओ के दो मौलिक सम्मेलनों की पुष्टि की।
सोमवार कोवांग ने कहा कि चीन के संयुक्त राष्ट्र में स्थायी प्रतिनिधिचेन जू ने आईएलओके महानिदेशक गाय राइडर को चीन द्वारा जबरन श्रम सम्मेलन द्वारा जबरन श्रम की पुष्टि करने वाले और जबरन श्रम के उन्मूलन करनेवाले पारित प्रस्तावों की प्रति सौंपी।
वांग ने सोमवार को बीजिंग में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'जबरन श्रम उन्मूलन के क्षेत्र में वे सबसे महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय कानूनी साधन हैं। चीनी सरकार लगातार जबरन श्रम के खिलाफ है। चीन की सरकार ने अपनी सहमति से दो सम्मेलनों का अनुसमर्थन पूरा कर एक बार फिर बेगार के विरोध और संघर्ष पर अपनी दृढ़ स्थिति स्पष्ट कर दी है।'

• चीनी अत्याचारों के बावजूद तिब्बती महिलाएं स्वतंत्रता संग्राम जारी रखेंगी

०२ अगस्त, २०२२, विजय क्रांति, चेस

(चीनी कम्युनिस्ट पार्टी तिब्बती आबादी को बढ़ने से रोकने के लिए जबरन नसबंदी और सांस्कृतिक संहार के उपकरण के रूप में तिब्बत में बसने वाले हान मूल के लोगों के साथ तिब्बती लड़कियों के विवाह को प्रोत्साहित कर रही है)

आभासी बैठक में प्रतिभागीगण।

नई दिल्ली, मिलानो, ताइपे, धर्मशाला। ३०जुलाई को 'चीन के औपनिवेशिक शासन के तहत तिब्बती महिलाएं और मानवाधिकार' विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय वेबिनार में विशेषज्ञों ने तिब्बती महिलाओं के जबरन गर्भपात और सामान्य कार्यक्रम के रूप में जबरदस्ती नसबंदी करने, तिब्बत के लोगों पर परिवार नियोजन और जनसंख्या नियंत्रण लागू करने के लिए चीन और उसकी कम्युनिस्ट पार्टी की आलोचना की। विशेषज्ञों ने सरकार द्वारा प्रायोजित तिब्बत में आगत हान पुरुष बाशिंदों और स्थानीय तिब्बती महिलाओं के बीच विवाह को सांस्कृतिक संहार का एक और उपकरण बताया जो तिब्बत में निरंतर प्रगति पर है। उन्होंने इसके माध्यम से विवाह संस्था के राजनीतिकरण का भी आरोप लगाया। विशेषज्ञ तिब्बती महिलाओं द्वारा प्रदर्शित दृढ विश्वास और उनके साहस की भी सराहना कर रहे थे।विशेष रूप से कब्जे वाले तिब्बत के अंदर रहने वाली महिलाओं नेऔपनिवेशिक चीनी शासन से तिब्बत की स्वतंत्रता के लिए चल रहे संघर्ष में अपना दृढ विश्वास और

साहस बनाए रखी है।

वेबिनार का आयोजन ३०जुलाई की शाम को नई दिल्ली के सेंटर फॉर हिमालयन एशिया स्टडीज एंड एंगेजमेंट (चेस) और धर्मशाला स्थित तिब्बती युवा कांग्रेस द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। मुख्य विशेषज्ञ वक्ताओं में मिलानो इटली से 'बिटर विंटर' पत्रिका के प्रभारी निदेशक श्री मार्को रेस्पिंटी, ताइवान के सिंचु में नेशनल यांग-मिंग चियाओ तुंग विश्वविद्यालय में मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग की अध्यक्ष प्रोफेसर मेई-लिन पैनऔर धर्मशाला से 'स्टूडेंट्स फ़ॉर ए फ्री तिब्बत' की कार्यक्रम निदेशक सुश्री तेनज़िन पासांग शामिल हुईं। चेस के अध्यक्ष और सह-मेजबान श्री विजय क्रांति ने वेबिनार का संचालन किया। जवाहर लाल विश्वविद्यालय, नई दिल्ली की प्रो. आयुषी केतकर ने प्रश्न-उत्तर सत्र का संचालन किया और टीवाईसी के महासचिव और सह-मेजबान श्री सोनम छेरिंग ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

चीनी औपनिवेशिक शासन के तहत तिब्बती महिलाओं की स्थिति के बारे में अपनी प्रस्तुति में युवा तिब्बती महिला कार्यकर्ता तेनजिन पासांग ने कालानुक्रम से विवरण दिया कि कैसे तिब्बती महिलाओं ने १९५१ में तिब्बत पर कब्जे के बाद से तिब्बत की आजादी की लड़ाई में सक्रिय भूमिका निभाई है और ऐसा करके उन्होंने चीनी सरकार के गुस्से को आमंत्रित किया गया है। उन्होंने कहा कि तिब्बती महिलाओं को चीनी जेलों में लंबे कारावास के अलावा, गंभीर शारीरिक हिंसा, यातना और जेल अधिकारियों द्वारा बलात्कार जैसी अन्य संगीन जुर्मों का सामना करना पड़ता है। जेल के बाहर तिब्बत में भी चीनी अधिकारी जनसंख्या नियंत्रण को लागू करने के विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। तिब्बत में खासकर १९९२ से चीन की परिवार नियोजन नीति बहुत ही दखल देने वाली, विकृत और हिंसक है। ऐसे मामले सामने आए हैं जिनमें वे कुछ तुच्छ आधारों पर पति को जेल में डालकर महिला को गर्भपात या नसबंदी के लिए ब्लैकमेल और मजबूर करते हैं। महिलाओं को 'अनियोजित रूप से' बच्चे को जन्म देने की स्थिति में सरकारी प्रतिबंधों के लिए गंभीर आर्थिक प्रतिबंधों से गुजरने के लिए मजबूर किया जाता है। जुर्माना परिवार की पूरे साल की आय के बराबर हो सकता है। पासांग ने कहा कि यदि कोई बच्चा 'अनियोजित रूप से' पैदा होता हैतो बच्चे की चिकित्सा देखभाल और शिक्षा जैसी सभी महत्वपूर्ण सुविधाएं वापस ले ली जाती हैं। यह तिब्बती महिलाओं पर गंभीर वित्तीय, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक तनाव का कारण बनता है।

अतीत में तिब्बत से भागने में सफल होने वाली तिब्बती महिलाओं की कई गवाहिओं का उल्लेख करते हुए, पासांग ने कहा कि चीनी अधिकारियों और चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा परिवार नियोजन योजनाओं को लागू करने के लिए तिब्बती महिलाओं के खिलाफ भ्रामक तरीकों का इस्तेमाल करना आम बात है। प्रसव से इतर बीमारियों की चिकित्सा के लिए चीनी चिकित्सा केंद्र में जानेवाली महिलाओं की आम शिकायतें रहीं हैं कि उन्हें गर्भपात के लिए दवाएं दी गईं। कई मामलों में इससे महिला की मौत भी हुई है।'

"एक ऐसे समाज में जहां पहले से ही बड़ी संख्या में भिक्षु और भिक्षुणियां हैं जो जनसंख्या वृद्धि में योगदान नहीं देते हैं, तिब्बती महिलाओं को 'एक बच्चा'नीति के लिए मजबूर करने से तिब्बती समाज गंभीर रूप से प्रभावित हुआ है। पासांग ने कहा कि तिब्बत में बड़ी संख्या में हान पुरुषों को बसाने की चीन की नीति और तिब्बती महिलाओं और हान पुरुषों के बीच विवाह के लिए विशेष आर्थिक और अन्य प्रोत्साहन देने की नीति ने इसे और भी बदतर बना दिया है। यह सब विवाह को एक राजनीतिक हथियार और तिब्बती राष्ट्रीयता और संस्कृति को कमजोर करने के साधन के रूप में परिवर्तित करने के बराबर है।'

अपनी प्रस्तुति को समाप्त करते हुए पासांग ने कहा कि तिब्बत में चीन की ये सभी कार्रवाइयां सांस्कृतिक संहार के समान हैं और संयुक्त राष्ट्र संहार सम्मेलन के खिलाफ हैं, जिस पर चीनी सरकार ने भी हस्ताक्षर किए हैं। उन्होंने घोषणा की, 'लेकिन तिब्बत के औपनिवेशिक आकाओं के इस अन्याय, हिंसा और दमन के बावजूद तिब्बती महिलाओं ने आजादी की उम्मीद नहीं खोई है और उन्होंने अपने देश पर चीनी औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष जारी रखा हुआ है।'

चीन की कम्युनिस्ट सेना द्वारा तिब्बतियों की सामूहिक हत्याओं को याद करते हुए श्री मार्को रेस्पिंटी ने कहा, 'जब चीनी कम्युनिस्ट शासन जैसी सरकार अपनी सांस्कृतिक, भाषाई, धार्मिक और नस्लीय पहचान से जाना जाने वाले तिब्बतियों जैस मानव समूह को निशाना बनाती है तो यह पूरी तरह से इस समूह को अपने में विलीन कर लेने,इसकी विशिष्टता को अस्वीकार करने, इसकी मान्यताओं, रीति-रिवाजों और भाषा को बदनाम करने और इसके धर्म को तोड़ने के साथ धार्मिक और नस्लीय सफाए और संहार का मामला बनता है। यह एक व्यापक संहार है, भले ही सड़कों पर लाशों के ढेर न दिखें। उन्होंने चेतावनी दी कि वास्तव में, अगर चीन के इस अभियान को नहीं रोका गयातो एक समय ऐसा आएगा जब कोई तिब्बती नहीं बचेगा और वे एक नस्ल के तौर पर विलुप्त हो जाएंगे।'

रेस्पिंटी ने १९७९से २०१५तक 'एक बच्चा'नीति, २०१५में लागू 'दो बच्चा' नीति और फिर हान आबादी के लिए २०२१ की 'तीन बच्चा' नीति के माध्यम से चीनी सरकार के परिवार नियोजन अभियानों के विकास और बदलाव को रेखांकित किया। लेकिन इन सभी अवधियों में तिब्बत, झिंझियांग और आंतरिक मंगोलिया के कब्जे वाले 'स्वायत्त' क्षेत्रों में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की परिवार नियोजन की आक्रामक नीति बनी रही, जिसे जबरन नसबंदी और गर्भपात जैसी विधियों के माध्यम से पूरा किया गया।

ताइवान के सिंचु में नेशनल यांग मिंग चिआओ तुंग विश्वविद्यालय में मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग की अध्यक्ष प्रोफेसर मेई-लिन पैनभारत, नेपाल और ताइवान में तिब्बती शरणार्थी महिलाओं की स्थिति का अध्ययन कर रही हैं।उन्होंने उनके साथ पंद्रह साल तक बातचीत की। तिब्बत से हाल ही में भागे लोगों के चीनी भाषा बोलने का लाभ उठाते हुए उन्होंने अपने अनुभव को साझा किया कि हर प्रकार की सामाजिक, शैक्षिक और व्यावसायिक स्थिति के बावजूद तिब्बती महिलाओं को अपने चीनी औपनिवेशिक आकाओं के हाथों किस प्रकार से दमन और भेदभाव का शिकार होना पड़ता है। पैन ने कहा कि चीन के परिवार नियोजन अभियान का पूरा दारोमदार तिब्बत की महिलाओं पर केंद्रित है। तिब्बती महिलाओं के जबरन गर्भपात और नसबंदी को जनसंख्या नियंत्रण के स्वीकृत साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है और तिब्बती पुरुषों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता है। नतीजतन, यह अभियान तिब्बती महिलाओं के तिब्बत से भागने और भारत जाने के मुख्य कारणों में से एक बन जाता है।

इस संदर्भ में उन्होंने तिब्बती महिलाओं के दो उदाहरण प्रस्तुत किए।एक गरीब गृहिणी और दूसरी एक उच्च योग्य चिकित्सा सर्जन जिन्होंने चीन-नियंत्रित तिब्बत से भागने का फैसला किया और अपनी जान जोखिम में

डाल कर भारत भागीं। दोनों ही मामलों में चीनी अधिकारी चाहते थे कि महिलाएं गर्भपात कराएं जबकि दोनों ने जोखिम उठाने का फैसला किया और निर्वासन में भाग गए। तिब्बती महिलाओं के साहस और दृढ़ संकल्प की प्रशंसा करते हुएतिब्बत के अंदर रहने वालों के साथ-साथ निर्वासन में रहने वालीप्रो पान ने कहा कि तिब्बत की महिलाएं पारिवारिक मोर्चे के साथ-साथ राष्ट्रीय संघर्ष में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

टीवाईसी के महासचिव और वेबिनार के सह-मेजबान श्री सोनम छेरिंग ने धन्यवाद ज्ञापति करते हुए तिब्बत पर चीनी कब्जे के खिलाफ राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में तिब्बती महिलाओं के शानदार, निरंतर और साहसी योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने १९५९में चीन के खिलाफ पहले राष्ट्रीय विद्रोह के दौरान ल्हासा की महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि,'बाद के वर्षों में भी तिब्बत के भीतर तिब्बती महिलाओं ने पति और परिवार के अन्य पुरुष सदस्यों को तिब्बत के कम्युनिस्ट शासकों द्वारा जेल भेजे जाने के बाद की संवेदनशील स्थिति में भी जेल जाने में साहस का प्रदर्शन किया है।'

*****

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tenzin Jordan
Deputy Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

तेनजिंग जॉर्डन
उप–समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com

August, 2022, Years: 43 Issue: 08 Regd No. : RNI 34636-79

निर्वासित तिब्बती सरकार द्वारा भारत की ८६वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

भारतीए सांसद और तिब्बत समर्थक समूहों की कोर कमिटी की बैठक।